



अधिकतम 28.3 डिग्री
न्यूनतम 8.5 डिग्री

हरिभूमि रोहतक भूमि

रोहतक, रविवार, 23 नवंबर 2025

11 लाखन मात्रा में मंजी पर बैठे थे गुरु तेग बहादुर ...



12 हरियाणा के युवक रूस में फंसते तो प्रदर्शन करने ...



खबर संक्षेप

ट्रेन की चपेट में आने से व्यक्ति की मौत

रोहतक। रेलवे स्टेशन पर शनिवार शाम को एक दर्दनाक हादसा हो गया, जिसमें राजस्थान के अनुपगढ़ निवासी एक व्यक्ति की ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई। पुलिस ने मृतक को पीजीआई के पोस्टमार्टम हाउस में भिजवाया। जेब में मिले आईडी कार्ड के आधार पर हो गई। पुलिस ने तुरंत परिजनों को सूचना दे दी है। परिजनों के आने के बाद पोस्टमार्टम करवाया जाएगा और प्रक्रिया पूरी होने पर शव परिजनों को सौंप दिया जाएगा।

युवक को अवैध हथियार सहित गिरफ्तार

रोहतक। सीआईए-1 की टीम ने एक युवक को अवैध हथियार सहित गिरफ्तार किया। गिरफ्तार आरोपी से एक देशी पिस्तौल और दो रॉड बरामद किए गए। पुलिस ने आरोपी को कोर्ट में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। प्रभारी सीआईए-1 स्टाफ निरीक्षक कुलदीप सिंह ने बताया कि कबीर कॉलोनी की ओर से आ रहे एक युवक को शक के आधार पर रोका गया।

जाट कॉलेज के छात्रों ने किया वीटा दूध प्लांट का शुभारंभ

रोहतक। जाट कॉलेज के बीसीए के विद्यार्थियों ने वीटा दूध प्लांट का औद्योगिक भ्रमण किया। इस दौरान उन्हें उत्पादन प्रक्रिया और कंप्यूटर सिस्टम के बारे में जानकारी दी गई। वीटा दूध व अन्य उत्पादों की गुणवत्ता और शुद्धता को लेकर विस्तार से जानकारी दी गई। विद्यार्थियों को बताया गया कि रोहतक मिल्क प्लांट में बफ्री, काजू पिन्नी और बेसन लड्डू जैसे उत्पाद भी लॉन्च किए हैं। इस प्लांट की वर्तमान उत्पादन क्षमता 4.5 लाख लीटर प्रतिदिन है। संयंत्र में दूध आने के बाद, उसकी गुणवत्ता की जांच की जाती है। सैपल की जांच के बाद, टैंकर को अनलॉडिंग स्टेशन से जोड़ा जाता है।

सिसरौली में इनलो की जनसभा आज

रोहतक। इनलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष अश्वि सिंह चौधला 23 नवंबर को रोहतक आएंगे। वे जिला के गांव सिसरौली में जनसभा को संबोधित करेंगे। इस जनसभा का आयोजन युवा नेता संदीप लठवाल की ओर से किया गया है। इस दौरान अनेक युवा साथी व अन्य पार्टियों के कार्यकर्ता इनलो में शामिल होंगे। यह जानकारी इनलो के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष इंद्र सिंह दुल ने दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में इनलो का जनाधार लगातार बढ़ रहा है क्योंकि पार्टी की नीतियां जनहितैषी हैं।



एसएफआई की 31वीं यूनिट कमेटी का गठन

रोहतक। पंडित नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को एसएफआई की 31वीं 15-सदस्यीय यूनिट कमेटी का गठन किया गया। नई कमेटी में लक्ष्य को अध्यक्ष और प्राची को यूनिट सचिव चुना गया। वहीं अंशुल और मोनु उपाध्यक्ष बने, जबकि निखिल और धर्मेंद्र को सह सचिव की जिम्मेदारी सौंपी गई। सदस्य के रूप में जया, खुशबू, किरण, रोहित, अरुण, जितन, सागर, दीपांशु और कर्तव्य शामिल किए गए।

वैद्य स्कूल में एनसीसी दिवस मनाया

रोहतक। फर्स्ट हरियाणा एनसीसी बटालियन के कमान अधिकारी कर्नल सुखविंदर सिंह, प्रशासनिक अधिकारी कर्नल अमन चौधरी के दिशा निर्देशानुसार वैद्य पब्लिक स्कूल के प्रांगण में प्राचार्या सुषमा सुहाग, लेफ्टिनेंट नवीन पंचाल की उपस्थिति में 78वां एनसीसी दिवस समारोह मनाया गया।

लकड़ी की चौखट और दरवाजों के कारण तेजी से फैली आग



हरिभूमि न्यूज | रोहतक

झज्जर रोड क्षेत्र में देर रात अचानक लगी आग ने एक बड़े प्लाईवुड गोदाम को पूरी तरह तबाह कर दिया। आग इतनी तेजी से भड़की कि कुछ ही मिनटों में गोदाम लपटों से घिर गया और भीतर रखा करोड़ों का सामान चंद घंटों में राख में तब्दील हो गया। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड विभाग की टीम मौके पर पहुंची और करीब पूरी रात चलने वाले अभियान के बाद स्थिति को काबू में कर पाई। घटना से पूरे इलाके में अफरा-तफरी का माहौल बन गया और आस-पास के लोगों की भीड़ मौके पर इकट्ठा हो गई।

आग तेजी से पकड़ी

झज्जर रोड पर खरीती लाल-नवीन कुमार नाम से संचालित इस गोदाम में विभिन्न प्रकार की लकड़ी, प्लाईवुड, दरवाजे, चौखट और जंगले तैयार किए जाते थे। लकड़ी आधारित सामग्री ज्वलनशील होने के कारण आग बेहद तेजी से फैल गई। शुरुआती जानकारी के अनुसार, गोदाम के एक हिस्से में पहले लपटें उठीं, जिसके बाद कुछ ही समय में पूरा परिसर आग की चपेट में आ गया। रात करीब 12 बजे आसपास रहने वालों ने गोदाम से धुआं निकलते देखा मालिक नवीन सचदेवा को सूचना दी।

झज्जर रोड क्षेत्र में वारदात, दमकल कर्मियों ने 44 गाड़ियों की मदद से बुझाई गई आग

प्लाईवुड गोदाम में भड़की आग, करोड़ों की संपत्ति खाक, रातभर चली राहत कार्रवाई



रोहतक। आग से जली मशीनें।



फोटो: हरिभूमि

गोदाम मालिक ने अपनी आंखों के सामने देखा विनाश का मंजर

मालिक नवीन सचदेवा के अनुसार, उन्हें रात के समय किसी परिचित का फोन आया कि गोदाम में आग लगी है। वे तुरंत मौके पर पहुंचे, लेकिन वहां पहुंचते ही उन्हें सिर्फ धुआं और ऊंची-ऊंची लपटें दिखाई दीं। उन्होंने बताया कि 1994 से वे इस व्यवसाय में हैं और अपनी मेहनत और जमा पूंजी से यह यूनिट खड़ी की थी, लेकिन चंद घंटों में सब कुछ नष्ट हो गया। नवीन ने कहा कि जिंदगी भर की मेहनत इस गोदाम में खड़ी थी। मशीनरी से लेकर तैयार सामान तक सबकुछ आग में स्वाहा हो गया। हाथों-पैरों से जमीन खिसक गई कि अब आगे क्या होगा।

फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर पाया काबू

आग की गंभीरता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि फायर विभाग को एक के बाद एक वाहन बुलाने पड़े। 44 फायर ब्रिगेड की गाड़ियां घटनास्थल पर पहुंचीं और लगातार कई घंटों तक पानी डाला गया। विभिन्न स्टेशनों से टीमें बुलाकर ऑपरेशन को तेज किया गया। दमकलकर्मियों को गोदाम की संरचना और भीतर मौजूद लकड़ी की अधिकता के कारण काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। आग ऊपर-ऊपर शांत होती दिखती थी, लेकिन अंदर दबे हिस्सों में विंगरियां लगातार उठ रही थीं। अधिकारियों ने बताया कि गोदाम की गहराई और लकड़ी की भारी मात्रा के कारण आग पर काबू पाना बेहद चुनौतीपूर्ण था। कई बार लपटें इतनी अधिक बढ़ जाती थीं कि दमकलकर्मियों को पीछे हटना पड़ा। पानी की सप्लाई बनाए रखने के लिए आसपास के संसाधनों का भी उपयोग किया गया।

सामान, लकड़ी और मशीनरी पूरी तरह जलकर खाक

गोदाम में बड़े स्तर पर लकड़ी का कच्चा स्टॉक मौजूद था, साथ ही दरवाजे, चौखट, जंगले और अन्य तैयार सामान भी बड़ी मात्रा में रखा हुआ था। इसके अलावा महंगी मशीनरी, कटिंग उपकरण, और प्लाईवुड बनाने में उपयोग होने वाले कई औद्योगिक साधन भी थे। सभी कुछ आग की चपेट में आ गया। नवीन सचदेवा ने अनुमान बताया कि लाखों रुपये की मशीनरी, करोड़ों रुपये का तैयार माल और भारी मात्रा में कच्चा स्टॉक सबकुछ जलकर नष्ट हो गया। उनका कहना है कि काफी भारी नुकसान हुआ है। हालांकि, विस्तृत आकलन के बाद यह राशि और भी अधिक हो सकती है।

सरकार और प्रशासन से आर्थिक सहायता की मांग

भीषण आग के बाद गोदाम मालिक ने प्रशासन और प्रदेश सरकार से आर्थिक सहायता की अपील की है। उनका कहना है कि उनके लिए यह सिर्फ एक फैक्ट्री नहीं थी, बल्कि जीवन भर की पूंजी थी, जिसे फिर से खड़ा करना आसान नहीं होगा। उन्होंने कहा कि अगर सरकार की ओर से मदद मिले तो वह अपने व्यवसाय को दोबारा खड़ा कर पाएंगे और जिन मजदूरों पर उनकी रोजी-रोटी निर्भर है, उनका भविष्य भी सुरक्षित रह सकेगा।

स्थानीय लोगों ने दहशत, मौके पर जुटी भीड़

घटना के बाद आसपास के निवासियों में भी दहशत फैल गई। लोगों ने बताया कि आग की लपटें इतनी ऊंची थीं कि वे दूर से भी दिखाई दे रही थीं। कई लोग रातभर मौके पर बने रहे। पुलिस ने भी भीड़ को नियंत्रित करने के लिए अतिरिक्त बल तैनात किया। आस-पास की दुकानों और मकानों को भी सावधानी के तौर पर खाली कराया गया।

अग्निकांड के कारणों की जांच शुरू

प्रशासन ने आग लगने के कारणों का पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक अनुमान शांत सर्कित का है, लेकिन सटीक कारण जांच रिपोर्ट के बाद ही साफ होगा। अधिकारियों का कहना है कि इस तरह की इकाइयों में सुरक्षा इंतजामों की नियमित जांच आवश्यक है, ताकि ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकी जा सके।

मदवि कुलपति का संत समाज से सार्थक संवाद

एमडीयू में नशा-मुक्त, योग-युक्त और सेवा-मूलक शिक्षा का नया रोडमैप तैयार

हरिभूमि न्यूज | रोहतक

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के यूनिवर्सिटी आउटरचि प्रोग्राम के तहत कुलपति प्रो. राजबीर सिंह ने संत समाज के साथ विशेष संवाद किया। यह संवाद एमडीयू की समाजोन्मुख गतिविधियों को आध्यात्मिक दिशा देने की महत्वपूर्ण कड़ी रहा। इस अवसर पर प्रतिष्ठित अखाड़ों के संतों ने विश्वविद्यालय पधारकर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। इनमें श्री 1008 महामंडलेश्वर स्वामीजी राधेवंद भारती



महाराज, निरंजनी अखाड़ा, हरिद्वार; उपाचार्य श्री 1008 महामंडलेश्वर स्वामी कपिलपुरी महाराज, जूना अखाड़ा, हरिद्वार; स्वामी शंकरानंद महाराज, निरंजनी अखाड़ा, हरिद्वार;

स्वामी सुखाशाह महाराज तथा संत हरपाल दास महाराज विशेष रूप से शामिल रहे। विवि की ओर से प्रो. अंजु धीमान, प्रो. ऑफ प्रक्टिस सुनील जगलान, प्रो. आश्वी दींगार, प्रो. राजकुमार, डॉ. शमशेर तथा एमडीयू की आउटरचि गतिविधियों से जुड़ी टीम ने सक्रिय भागीदारी निभाई। कुलपति प्रो. राजबीर सिंह ने बताया कि एमडीयू द्वारा "नशा-मुक्त घर अभियान", ऐप-आधारित आउटरचि गतिविधियां, सामुदायिक सेवा पर चार क्रेडिट का पाठ्यक्रम चल रहे हैं।

एमडीयू: इंडियन एनालिटिकल कांग्रेस आईएसी का समापन

रोहतक। महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी के केमिस्ट्री विभाग और द्वारा आयोजित तीन दिवसीय चौथा इंडियन एनालिटिकल कांग्रेस (आईएसी 2025) शनिवार को ज्ञान, नवाचार और वैज्ञानिक सहयोग की भावना को सुदृढ़ करते हुए प्रेरक वातावरण में संपन्न हुआ। समापन सत्र में एमडीयू कुलपति प्रो. राजबीर सिंह ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। डॉ. अनुराग अतीत गुप्ता (आईपीएस अकादमी, इंदौर) विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कुलसचिव डॉ. कृष्णाकान्त की गरिमामयी उपस्थिति आखिरी दिन भी रही।

मदवि में पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग में कार्यशाला

साक्षात्कार में सफलता पाने के टिप्स दिए

हरिभूमि न्यूज | रोहतक

किसी भी साक्षात्कार में सफलता प्राप्त करने के लिए योजनाबद्ध तैयारी जरूरी होती है। साक्षात्कार की तैयारी करने के लिए पहले से संचालित प्रश्नों की रूप रेखा तय करने तथा अपने व्यक्तिगत गुणों को उल्लेखित करने की कला पर आज महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग में आयोजित किए जा रहे एम्प्लॉयबिलिटी स्क्रिप्स कार्यशाला में विशेषज्ञ सुदीप घोष ने प्रभावी टिप्स दिए। सुदीप घोष ने विद्यार्थियों को बताया कि साक्षात्कार में सफलता के लिए उपयुक्त परिधान के साथ उचित तरीके से बैठने तथा सकारात्मक बाँधी लैंग्वेज पर ध्यान देने की जरूरत है। प्रश्नों के उत्तर देते हुए वॉयस की टोन किस प्रकार हो, इंटरव्यू है परिधान कैसा हो, इन सब जरूरी बातों पर



विशेषज्ञ सुदीप घोष ने प्रकाश डाला। उन्होंने कार्यशाला प्रतिभागियों के प्रश्नों के उत्तर भी किए। कार्यशाला समन्वयक प्राध्यापक सुनिता मुखर्जी ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि प्रॉपर प्रिपेरेशन इन द की टू इंटरव्यू सक्सस। विद्यार्थियों से सीखने की मानसिकता विकसित करने का आग्रह उन्होंने किया।

तैयारी

भव्य आयोजन की तैयारी में जुटे अधिवक्ता

प्रसारण चौधरी रणबीर सिंह हॉल में होगा

बार एसोसिएशन में सीजेआई सूर्यकांत के शपथ ग्रहण का होगा लाइव प्रसारण

कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला एवं सत्र न्यायाधीश नीरजा कुलवंत कलस करंगी

हरिभूमि न्यूज | रोहतक

जिला बार एसोसिएशन में सर्वोच्च न्यायालय के नवनियुक्त मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत के शपथ ग्रहण समारोह का सीधा प्रसारण बड़ी स्क्रीन पर किया जाएगा। यह प्रसारण चौधरी रणबीर सिंह हैमोरियल हॉल में होगा। यह जानकारी बार काउंसिल ऑफ पंजाब एवं हरियाणा के सदस्य एवं पूर्व चेयरमैन डॉ. विजेंद्र अहलावत तथा जिला बार एसोसिएशन के प्रधान एडवोकेट दीपक हुड्डा ने पत्रकारों को दी। उन्होंने बताया कि समारोह को



रोहतक। पत्रकारों से बातचीत करते बार काउंसिल ऑफ पंजाब एवं हरियाणा के पूर्व चेयरमैन डॉ. विजेंद्र अहलावत तथा जिला बार एसोसिएशन के प्रधान एडवोकेट दीपक हुड्डा।

यादगार बनाने के लिए एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला एवं सत्र न्यायाधीश रोहतक नीरजा कुलवंत कलस करंगी। इस मौके पर सभी न्यायिक अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी, अधिवक्ता

तथा शहर के गणमान्य लोग उपस्थित रहेंगे। सुबह हवन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की जाएगी। पूर्व चेयरमैन डॉ. विजेंद्र अहलावत ने बताया कि मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत का जन्म

फरवरी 1962 में जिला हिसार के गांव पेटवाड़ में हुआ था। उन्होंने वर्ष 1984 में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय से एलएलबी की परीक्षा उत्तीर्ण की और जिला अदालत हिसार से वकालत की शुरुआत की। 1985 में वे चंडीगढ़

शिफ्ट हो गए। वर्ष 2001 में वे सबसे कम उम्र के एडवोकेट जनरल बने। 2004 में पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के न्यायाधीश नियुक्त हुए। 5 अक्टूबर 2018 को उन्होंने हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ ली और 24 मई 2019 को सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश बने। डॉ. अहलावत ने कहा कि 24 नवंबर 2025 का दिन हरियाणा के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज होगा, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट के 75 वर्ष के इतिहास में पहली बार हरियाणा का कोई व्यक्ति देश के सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश बनेगा। इस मौके पर सभी न्यायिक अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी, अधिवक्ता तथा शहर के गणमान्य लोग उपस्थित रहेंगे। सुबह हवन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की जाएगी।



महम। मोखरा में एनएसएस कैम्प के दौरान स्वयंसेवकों और शिक्षकों को आंखों की देखभाल के बारे में जानकारी देते नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉक्टर कमल।

डॉक्टर कमल ने एनएसएस स्वयंसेवकों को दिए आंखों की देखभाल के टिप्स

महम। राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मोखरा में चल रहे एनएसएस सात दिवसीय विशेष शिविर के पांचवें दिन विभिन्न प्रेरणादायक, रचनात्मक एवं जागरूकता से जुड़े कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रातःकालीन सत्र में अंग्रेजी विषय के प्रवक्ता विक्रम सिंह तथा गणित अध्यापक विवेक गौतम ने 'नेतृत्व एवं आत्मनिर्भर भारत' विषय पर विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनने, निर्यात क्षमता विकसित करने तथा राष्ट्र-निर्माण में अपनी भूमिका को समझने के लिए प्रेरित किया। इसके पश्चात डॉ. सुरेश सरोहा एवं ड्राइंग इंस्ट्रक्टर संजीव के निदेशन में 'नशा मुक्त भारत' विषय पर पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने बह-चंद्रकर भाग लिया और नशे के दुष्प्रभावों को रचनात्मक रूप से प्रदर्शित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. कमल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, मंडीना रहे। नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉक्टर कमल ने एनएसएस स्वयंसेवकों को आंखों की देखभाल के बारे में विस्तृत जानकारी दी। विद्यार्थियों से नियमित नेत्र परीक्षण करवाने और तुरंत आहार लेने के लिए प्रेरित किया। विशिष्ट वक्ता एवं जिला समन्वयक, एन एस एस, इकाई रोहतक मनोज अहलावत ने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा कि एन एस एस, स्वयंसेवक ही भविष्य के राष्ट्र निर्माता हैं।

गोल्ड लीजिंग, जिसके जरिए आजकल लोग कर रहे कमाई क्या हैं फायदे और नुकसान

आजकल कई लोग ऐसे हैं जो गोल्ड लीजिंग के जरिए काफी अच्छी कमाई कर रहे हैं। अब यह गोल्ड लीजिंग क्या है? आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं। साथ में गोल्ड लीजिंग के फायदे और नुकसान के बारे में भी बताने वाले हैं।



हर व्यक्ति चाहता है, कि उसके पास ज्यादा पैसा हो और उसे पैसों की कभी कमी न हो। इसके लिए लोग कमाई करने के साथ साथ अपने पैसों को निवेश करते हैं। इसके अलावा आजकल लोग अपनी तिजोरी में रखें हुए सोने से भी कमाई कर रहे हैं। जो हां, हम बात कर रहे हैं गोल्ड लीजिंग की। आजकल कई लोग ऐसे हैं जो गोल्ड लीजिंग के जरिए काफी अच्छी कमाई कर रहे हैं। अब यह गोल्ड लीजिंग क्या है? आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं। साथ में गोल्ड लीजिंग के फायदे और नुकसान के बारे में भी बताने वाले हैं।

गोल्ड लीजिंग क्या होता है ?

गोल्ड लीजिंग को आसान शब्दों में समझें तो गोल्ड लीजिंग में आप अपने सोने को किराए पर देते हैं और कमाई कर लेते हैं। आजकल कई डिजिटल प्लेटफॉर्म लोगों को गोल्ड लीजिंग की सुविधा ऑफर कर रहे हैं। इन प्लेटफॉर्म के जरिए लोग अपने गोल्ड को किराए पर दे सकते हैं और कमाई कर सकते हैं। गोल्ड लीजिंग में आप एक निश्चित समय के लिए अपने गोल्ड को लीज या किराए पर देते हैं। इसके बदले में आपको 2 से 7 प्रतिशत तक रिटर्न मिलता है। अब खास बात यह है कि गोल्ड लीजिंग में मिलने वाला रिटर्न आपको गोल्ड के रूप में भी मिल सकता है और यह कैश में भी हो सकता है। वहीं अगर सोने का भाव बढ़ता है, तो आपका रिटर्न भी बढ़ता है।

गोल्ड लीजिंग के फायदे-नुकसान

गोल्ड लीजिंग में अगर सोने की कीमतें बढ़ती हैं तो आपको ही फायदा होगा लेकिन सोने की कीमत गिरने पर आपका रिटर्न कम हो सकता है। गोल्ड लीजिंग के जरिए आप अपने तिजोरी में रखे सोने के जरिए काफी अच्छी कमाई कर सकते हैं लेकिन गोल्ड लीजिंग एक नया ट्रेंड है। ऐसे में इसके लिए अभी नियम पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं। वहीं कई मामलों में निवेशक के साथ फ्रॉड भी हो सकता है। इसके अलावा अगर आप गोल्ड लीजिंग की अवधि के बीच में अपना सोना वापस चाहते हैं, तो सोना वापस लेना थोड़ा मुश्किल हो सकता है।

बच्चे के जन्म से शुरू करें निवेश, 18 साल होने पर तैयार होगा 50 लाख का फंड

पढ़ाई से लेकर शादी तक, सबका खर्च बह रहा है खर्च, क्या आप अपने बच्चे के भविष्य निर्माण के लिए तैयार हैं? यह सवाल इसलिए क्योंकि घर में बच्चे सबको प्रिय होते हैं। लेकिन बच्चों के सपनों को साकार करने के लिए बच्चे का आर्थिक भविष्य संवारने का काम सभी नहीं करते।

आमतौर पर देखा जाता है कि माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाई या शादी जैसे लंबे लक्ष्यों के लिए उनके नाम पर ही एक अलग फंड बनाना पसंद करते हैं। यह फंड अक्सर जन्मदिन या खास मौकों पर मिली छोटी-छोटी रकम से शुरू होता है और फिर माता-पिता समय-समय पर इसमें नियमित रूप से पैसा जोड़ते रहते हैं। विशेषज्ञ भी इसे अच्छा तरीका मानते हैं। आज हम आपको बता रहे हैं म्यूचुअल फंड के बारे में।

बच्चे की पढ़ाई और शादी की चिंता रहेगी दूर

भविष्य में अच्छे बिजनेस करने के लिए भी मिलेगा पैसा

चिल्ड्रन म्यूचुअल फंड के क्षेत्र में उदाहरण के लिए हम आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल चिल्ड्रन फंड को देखते हैं। यह एक ऐसी योजना है जिसका लंबा और भरोसेमंद रिकॉर्ड रहा है। इसने समय के साथ अच्छे रिटर्न दिए हैं। यह एक ओपन-एंडेड निवेश योजना है जो बच्चों के लिए बनाई गई है। इसमें कम से कम पांच साल का लॉक-इन होता है, या फिर जब बच्चा बालिंग हो जाए, जैसा भी पहले हो। यह फंड इक्विटी और डेट दोनों प्रकार की संघटियों में निवेश करता है और जरूरत पड़ने पर बेंचमार्क से बाहर रहता है जो अपने बच्चों में भी अवसर के अनुसार निवेश करने का प्रोत्साहन रखता है।



उतार-चढ़ाव का असर भी कुछ हद तक कम होता

इस योजना की खासियत इसका बदलते हालात के मुताबिक ढलने वाला निवेश तरीका है। यह किसी एक तय निवेश फॉर्मूले पर अनुसर कभी बचाव की मुद्रा में तो कभी आक्रामक रख अपनाती है। इससे फंड मैनेजर को समय-समय पर आर्थिक माहौल के हिसाब से उलट दिशा में भी कदम उठाने का अवसर मिलता है, जिससे पोर्टफोलियो में एक लचीलापन और जीवंतता बनी रहती है।

बाजार के हिसाब से होता है काम

जब बाजार में स्थिरता की जरूरत हो, तो यह फंड अपनी हिस्सेदारी का करीब 35% तक डेट में ले जा सकता है। और जब माहौल अनुकूल हो, तो उसी तेजी से फिर इक्विटी में लौट भी सकता है। इससे एक तरफ बढ़त के अवसरों का लाभ मिलता है और दूसरी तरफ अनिश्चित समय में उतार-चढ़ाव का असर भी कुछ हद तक कम होता है। कुल मिलाकर, यह चिल्ड्रन फंड उन अभिभावकों के लिए एक बेहतर विकल्प बनकर उभरता है जो अपने बच्चों की निवेश योजना में लचीलापन, सक्रिय फैसले और लंबी अवधि की सोच इन तीनों का संतुलित मेल चाहते हैं।

जल्दी निवेश करना क्यों है जरूरी

मान लीजिए कि किसी अभिभावक को अपने बच्चे के 18 साल का होने तक 50 लाख रुपये का कोर्पस तैयार करना है। अगर पहले माता-पिता (ए) ने बच्चे के जन्म के समय ही निवेश शुरू किया, तो 18 साल की अवधि में 12% की मान्य वृद्धि दर पर उन्हें हर महीने 6,598 रुपये निवेश करने होंगे। कुल मिलाकर 14.25 लाख रुपये का योगदान करना पड़ेगा। अगर दूसरे माता-पिता (बी) ने बच्चे के छह साल का होने पर निवेश शुरू किया, तो 12 साल की अवधि में उन्हें हर महीने 15671 रुपये लगाने होंगे। कुल योगदान 22.56 लाख रुपये का हो जाएगा। अगर तीसरे माता-पिता (सी) ने निवेश तब शुरू किया जब बच्चा 12 साल का हुआ, तो 12% की वृद्धि दर पर उन्हें हर महीने 47,751 रुपये लगाने होंगे और कुल योगदान 34.38 लाख रुपये तक पहुंच जाएगा। यानी लक्ष्य एक ही हो लेकिन देरी करने वालों को कहीं ज्यादा कीमत चुकानी पड़ती है। माता-पिता बी को ए की तुलना में 12.3 लाख और सी को ए की तुलना में 12.3 लाख रुपये अधिक निवेश करने पड़ेंगे। यही है निवेश में देरी की वास्तविक लागत। अंत में, बात फिर वहीं आती है। निवेश जितना जल्दी शुरू होगा, लंबे समय वाले इक्विटी निवेश की शक्ति उतनी ही प्रभावी होगी। माता-पिता चाहें तो बहुत सधी हुई रफ्तार से बच्चे के सपनों जैसा उज्वल भविष्य गढ़ सकते हैं।



जॉइंट फैमिली खत्म, अब बुढ़ापे में कौन देगा सहारा? मिडिल क्लास की सबसे बड़ी टेंशन पर अलर्ट

भारत में रिटायरमेंट का संकट गहरा रहा है, क्योंकि पुरानी व्यवस्थाएं अब पर्याप्त नहीं हैं। बढ़ती उम्र, स्वास्थ्य खर्च और सामाजिक सुरक्षा की कमी के कारण 70% से अधिक वरिष्ठ नागरिक परिवार पर निर्भर हैं। योजना बनाने में देरी से रिटायरमेंट के लिए पर्याप्त धन जमा नहीं हो पाता, जिससे भविष्य अनिश्चित हो जाता है।

नई दिल्ली: भारत में रिटायरमेंट का संकट अब आने वाला नहीं है, बल्कि यह पहले से ही मौजूद है। ज्यादातर भारतीय परिवार इसके लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं हैं। वेल्थ एडवाइजर नितिन पुष्करन ने इसे लेकर लिंकडइन पर एक पोस्ट में चेतावनी दी है। उनके मुताबिक, बच्चों का सहारा, पेंशन या प्रॉपर्टी जैसी पुरानी व्यवस्थाएं अब रिटायरमेंट को सुरक्षित करने के लिए काफी नहीं हैं। पुष्करन



ने लिखा, 'हम संयुक्त परिवार वाली व्यवस्था से निकलकर एकल आय वाली अर्थव्यवस्था में आ गए हैं।' उन्होंने बताया कि बढ़ती उम्र, स्वास्थ्य सेवाओं पर भारी खर्च और सामाजिक सुरक्षा की कमी ने मिलकर देश में एक बड़ा आर्थिक संकट पैदा कर दिया है। पेंशन फंड रेगुलेटरी एंड

डेवलपमेंट अथॉरिटी (पीएफआरडीए) और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के आंकड़ों के अनुसार, 60 साल से ज्यादा उम्र के 70% से अधिक भारतीय पूरी तरह से अपने परिवार पर निर्भर हैं। वहीं, 10% से भी कम लोग ईपीएफ, एनपीएस या सुपरएन्युएशन जैसी किसी भी रिटायरमेंट स्कीम में नियमित रूप से पैसा जमा करते हैं।

क्या फेल होती है रिटायरमेंट प्लानिंग?

पुष्करन ने इस बात पर जोर दिया कि रिटायरमेंट में असफलता का कारण आय की कमी नहीं, बल्कि योजना बनाने में देरी है। उन्होंने एक उदाहरण दिया कि अगर कोई 35 साल का व्यक्ति आज से 10,000 रुपये हर महीने एसआईपी में लगाना शुरू करे तो 60 साल की उम्र तक उसके पास 1 करोड़ रुपये से ज्यादा जमा हो जाएंगे।

योजना बनाने में देरी से रिटायरमेंट के लिए पर्याप्त धन नहीं हो पाता जमा जिससे भविष्य हो जाता है अनिश्चित

संकट बढ़ाने वाले कई और कारण

इस संकट को बढ़ाने वाले कुछ और कारण भी हैं। स्वास्थ्य सेवाओं पर होने वाला खर्च 11-14% तक है, जो दुनिया में सबसे ज्यादा में से एक है। साथ ही, लोगों की औसत उम्र भी 70 साल से ज्यादा हो गई है। पुष्करन ने यह भी बताया कि नौकरी के बीच में ईपीएफ से पैसे निकालना भी एक बड़ी वजह है, जिससे कई नौकरोपेशा लोगों का रिटायरमेंट के लिए पुराना होने वाला एकमात्र जरिया खत्म हो जाता है। भारत लौटने वाले एनआरआई (अनिवासी भारतीय) भी अक्सर रिटायरमेंट के बाद के खर्चों का सही अंदाजा नहीं लगा पाते। उनकी सलाह सीधी और स्पष्ट है, 'रिटायरमेंट के लिए पहले प्राथमिकता से योजना बनाएं, बची हुई रकम से नहीं। आपकी भविष्य की जीवनशैली आपके बच्चों या ईएमआई पर निर्भर नहीं होनी चाहिए!'

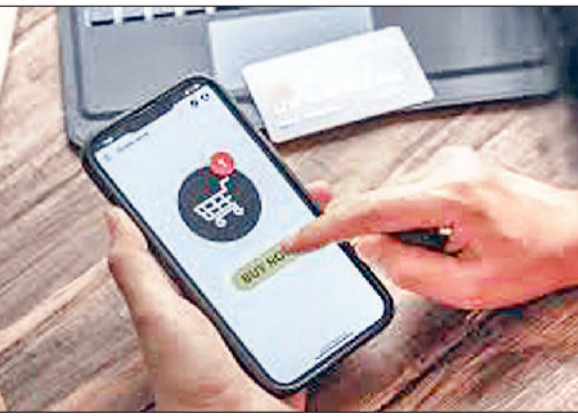
अब इस डिजिटल पेमेंट के तरीके में एक और दमदार ट्विस्ट

स्मार्ट होता भारत अब यूपीआई से पा रहा क्रेडिट का फायदा, मिल रहे रिवाँर्ड और कैशबैक भी

योजना

बिजनेस डेस्क

पैसों से जुड़े लेन-देन के तरीकों की भारत में यात्रा काफी लंबी और रोचक रही है। पहले जहां लोग जेब में कैश या चेक लेकर घूमते थे, तो वहीं बाद में इसकी जगह डेबिट/क्रेडिट कार्ड्स ने ले ली। और फिर आया पेमेंट को सुपर ईजी बना देने वाला बदलाव, यानी यूपीआई क्यू कोड, जिसमें व्यक्ति बस एक स्कैन करता है और महज सेकेंड्स में ट्रांजेक्शन पूरा हो जाता है। अब इस डिजिटल पेमेंट के तरीके में एक और दमदार ट्विस्ट आ चुका है। इसमें लोगों को न सिर्फ यूपीआई पेमेंट की रफ्तार और सहूलियत मिल रही है बल्कि वो क्रेडिट की ताकत का फायदा भी उठा रहे हैं। सोचिए कि आप किसी किराना स्टोर में जाएं, वहां पर अपनी रोजाना की चीजें खरीदें और यूपीआई स्कैन से तुरंत पेमेंट कर दें, लेकिन इसके बावजूद आपके सर्विंग अकाउंट से एक भी पैसा न कटे! और तो और आपको क्रेडिट कार्ड कैशबैक, रिवाँर्ड पॉइंट्स व बड़ी खरीदारी के भुगतान को ईएमआई में तब्दील करने का विकल्प भी मिल जाएगा। है ना ये शॉपिंग एक्सपीरियंस में दमदार ट्विस्ट? इसका श्रेय जाता है कीवी जैसे प्लेटफॉर्म को जिसने यूपीआई पेमेंट्स को एप के जरिए क्रेडिट से जोड़ने का काम किया है। यानी अब आप यूपीआई पेमेंट सीधे क्रेडिट कार्ड से कर सकते हैं।



एक स्कैन और बैंक से सीधे कट जाती है राशि

चाहे किताब खरीदनी हो, घर के लिए चावल या फिर ऑशिंग मशीन, सभी तरह की खरीदारी के लिए यूपीआई सबसे आम तरीकों में से एक बन चुका है। एक स्कैन से सारे पेमेंट हो जाते हैं, जिसके लिए बैंक अकाउंट से पैसे कटते हैं। अब इसमें समस्या ये है कि अगर व्यक्ति के खाते में पर्याप्त राशि नहीं हुई, तो पेमेंट अप्रूप नहीं होगा। साथ ही इसमें पूरा भुगतान एकमुश्त ही करना होता है फिर चाहे आप 10 रुपये की चीज खरीद रहे हों या फिर 50,000 रुपये की। इससे जेब पर एकदम से काफी भार भी पड़ता है। लेकिन अगर आपको यूपीआई के साथ क्रेडिट कार्ड की ताकत जुड़ी हो, तो इन चीजों का भार हल्का हो जाता है।

रुपे क्रेडिट कार्ड फॉर यूपीआई के फायदे

■ तुरंत और आसान भुगतान बस स्कैन करें और यूपीआई से भुगतान करें। यानी आपको पेमेंट के लिए व तो अपने साथ क्रेडिट कार्ड कैरी करने की जरूरत है और ना ही वॉलेट में कैश तलाशने की।

■ रिवाँर्ड और कैशबैक यूपीआई पेमेंट करने पर भी कैशबैक और रिवाँर्ड पॉइंट्स जैसे फायदे मिलते हैं, वो भी बिना किसी उलाहान मरी शर्तों या छिपे हुए नियमों के।

■ बाद में पेमेंट की सुविधा: बड़े अमाउंट को आप आसानी से ईएमआई में तब्दील कर सकते हैं, जिससे आपकी जेब पर एकदम से बोझ नहीं आता।

यहां क्रेडिट और यूपीआई चलते हैं साथ-साथ

सोचिए आप दुकान पर जाएं, यूपीआई से पेमेंट करें और आपका न सिर्फ सेकेंड्स में पेमेंट पास हो जाए, बल्कि कैशबैक भी मिल जाए। है ना फायदे का सौदा? ये ही फायदा लेकर आया है कीवी एप, जिससे पेमेंट करना आपके फायदा ही फायदा पहुंचाएगा। क्योंकि इस पर कैशबैक के साथ ही ईएमआई तक की सुविधा का आनंद लिया जा सकता है।



क्रेडिट-स्मार्ट और सशक्त होता भारत

जैसे-जैसे ज्यादा लोग यूपीआई के जरिए क्रेडिट का इस्तेमाल करने लगे हैं, वैसे-वैसे भारत में पैसे खर्च करने और संभालने का तरीका धीरे-धीरे बदलता जा रहा है। जो लोग अब तक सिर्फ डेबिट कार्ड या नकद पर निर्भर थे, उनके लिए ये बिना किसी झंझट के क्रेडिट की दुनिया में कदम रखने का आसान रास्ता बन गया है। कीवी जैसे प्लेटफॉर्म की पारदर्शी और आसान सेवाओं से भारत में डिजिटल पेमेंट न सिर्फ तेज हो रहे हैं, बल्कि ये लोगों को अधिक सशक्त और क्रेडिट स्मार्ट भी बना रहे हैं, जो नए भारत के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में सक्षम बनाता है।



हर माह 10,000 रुपये की बचत, बच्चों के लिए बनाएं 43 लाख का फंड

पब्लिक प्रोविडेंट फंड यानी पीपीएफ स्कीम और सुकन्या समृद्धि योजना यानी एसएसवाई स्कीम में आप हर साल थोड़ा थोड़ा निवेश कर लाखों का फंड बना सकते हैं। दोनों स्कीम में आपको 15 सालों तक अपने निवेश को जारी रखना होता है। आइए जानते हैं...

पैसों को एक अच्छी स्कीम में निवेश करना हर व्यक्ति के लिए जरूरी होता है। हर व्यक्ति को अपनी मंशली इनकम का कुछ हिस्सा एक अच्छी स्कीम में निवेश जरूर करना चाहिए, जिससे वह अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित कर सकें। ऐसी कई स्कीम और योजनाएं हैं, जहां आप अपने पैसों को सुरक्षित निवेश कर सकते हैं और लाखों का रिटर्न पा सकते हैं। आज हम आपको दो ऐसी स्कीम में बारे में बताएंगे, जिसमें आप हर महीने केवल 10,000 रुपये निवेश कर पूरे 43 लाख रुपये से ज्यादा का फंड बना सकते हैं। यह दोनों स्कीम सरकारी स्कीम हैं। ऐसे में यहां आपको पैसा भी सुरक्षित रहेगा। हम बात कर रहे हैं पब्लिक प्रोविडेंट फंड यानी पीपीएफ स्कीम और सुकन्या समृद्धि योजना यानी एसएसवाई स्कीम के बारे में। दोनों ही स्कीम में आप हर साल थोड़ा थोड़ा निवेश कर सकते हैं और दोनों स्कीम में आपको 15 सालों तक अपने निवेश को जारी रखना होता है।

पीपीएफ और एसएसवाई में रिटर्न

पीपीएफ में 7.1 प्रतिशत की दर से रिटर्न मिलता है और एसएसवाई में 8.2 प्रतिशत की दर से रिटर्न मिलता है। पीपीएफ में कोई भी व्यक्ति निवेश कर सकता है लेकिन एसएसवाई में केवल माता-पिता अपना 10 साल से कम उम्र की बेटों के नाम पर निवेश कर सकते हैं। दोनों ही स्कीम में 1000 रुपये से 1.50 लाख रुपये प्रति वर्ष निवेश किया जा सकता है।

ऐसे बढ़ेगा आपका फंड

अगर आप हर महीने 10,000 रुपये की बचत कर 5-5 हजार रुपये दोनों स्कीम में 15 सालों तक निवेश करते हैं तो आप 43 लाख रुपये से ज्यादा का फंड बना सकते हैं। हर महीने 5000 रुपये अगर आप पूरे 15 सालों तक पीपीएफ में निवेश करते हैं तो आप 15 सालों में कुल 9 लाख रुपये निवेश करेंगे। 15 साल बाद आपको कुल 16.27 लाख रुपये मिलेंगे। ऐसे में आपको 7.27 लाख रुपये का लाभ होगा। हर महीने 5000 रुपये अगर आप पूरे 15 सालों तक एसएसवाई में निवेश करते हैं तो आप 15 सालों में कुल 9 लाख रुपये निवेश करेंगे। 15 साल बाद आपको कुल 27.71 लाख रुपये मिलेंगे। ऐसे में आपको 18.71 लाख रुपये का लाभ होगा। इस तरह से आप 15 सालों में कुल 43.98 लाख रुपये का फंड बना सकते हैं।

लॉन्ग टर्म एसआईपी करोड़पति तो बना देंगे, लेकिन उस पर टैक्स कितना भरना पड़ेगा?

एक्सपर्ट्स की राय

बिजनेस डेस्क

एसआईपी में निवेश करके लॉन्ग टर्म में करोड़ों का फंड बनाया जा सकता है। आजकल वित्तीय एक्सपर्ट्स भी एसआईपी में निवेश करने की सलाह देते हैं। निवेशकों के साथ ही सोशल मीडिया पर भी एसआईपी में निवेश करने के फायदे गिनाए जाते हैं। यह सुनकर तो बहुत अच्छा लगता है कि 20-25 साल लगातार एसआईपी में निवेश करने के बाद आपके पास करोड़ों रुपए का फंड जमा हो जाएगा, आप करोड़पति बन जाएंगे। लेकिन आपको यह नहीं बताया जाता है कि एसआईपी रिटर्न जब आपको मिलेगा तब आपको कितना टैक्स भरना पड़ेगा। लॉन्ग टर्म में कमाई गई आई पर आपको टैक्स का भुगतान करना पड़ेगा जिससे आपका रिटर्न कम हो जाएगा।

रिटर्न के साथ टैक्स का भुगतान

लंबे समय के बाद आप यदि एसआईपी पर भारी भरकम मुनाफा कमाते हैं तो उस पर आपको टैक्स का भुगतान करना ही पड़ेगा। इसीलिए आपको पहले ही समझ जाना चाहिए कि लॉन्ग टर्म कैपिटल गैन टैक्स सिस्टम के अंतर्गत एसआईपी रिटर्न पर आपको कितना टैक्स देना पड़ेगा और कितना रिटर्न आपको मिल सकता है।

उदाहरण से समझिये पूरा गणित

मान लेते हैं कि आप हर महीने 15000 एसआईपी में निवेश करते हैं। यह एसआईपी लगातार 20 साल तक जारी रखी जाती है और यदि इस पर आपको 12% की दर से औसतन रिटर्न भी मिले तो 20 साल बाद मिलने वाला ब्याज सहित कुल रिटर्न 1,49,87,219 हो जाएगा। प्लीज रिटर्न पर आपको लॉन्ग टर्म कैपिटल गैन टैक्स का भुगतान करना होगा। नियम के अनुसार यदि आपको लाभ 1 साल से ज्यादा के निवेश पर 1,25,000 से ज्यादा है तो उस पर आपको 12.5% टैक्स के साथ 4% सेस का भी भुगतान करना पड़ेगा। यानी 1,49,87,219 में से 1,25,000 हटाने के बाद बची राशि पर आपको 12.5% टैक्स और 4% सेस का भुगतान करना पड़ेगा। इसके बाद भी आपको एक करोड़ से ज्यादा का रिटर्न तो मिलेगा ही लेकिन आपका रिटर्न थोड़ा कम हो जाएगा। इसलिए यदि आप लॉन्ग टर्म के लिए एसआईपी कर रहे हैं तो अपनी फाइनेंशियल प्लानिंग में यह भी शामिल करें कि उसे एसआईपी पर आपको बाद में टैक्स का भुगतान भी करना पड़ेगा।

राज्य स्तर पर मनाया जा रहा गुरु तेग बहादुर सिंह का 350वां शहीदी दिवस लाखन माजरा में मंजी पर बैठे थे गुरु तेग बहादुर, वहीं आज मंजी साहिब गुरुद्वारा

राज कुमार नरवाल ► महम

देश-विदेश में सिखों के नौवें गुरु तेग बहादुर सिंह का 350वां शहीदी दिवस धूमधाम से मनाया जा रहा है। हरियाणा सरकार द्वारा भी गुरु तेग बहादुर सिंह का शहीदी दिवस राज्य स्तर पर मनाया जा रहा है। प्रदेश में हिंद की चादर यात्रा निकाली जा रही है। इस यात्रा का समापन 25 नवंबर को कुरुक्षेत्र में किया जाएगा। इस यात्रा के समापन समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी शामिल होंगे। गुरु तेग बहादुर का लाखन माजरा गांव से खास संबंध है। जब वे अपना बलिदान देने के लिए दिल्ली जा रहे थे, तो वे 13 दिन तक लाखन माजरा में रुके थे। आज वहां पर उनकी याद में मंजी साहिब गुरुद्वारा बनाया गया है। देश विदेश से श्रद्धालु इस गुरुद्वारा में मंथा टेकने के लिए आते हैं। जिस जगह पर वे मंजी (चारपाई) पर बैठे थे, वहीं पर आज मंजी साहिब गुरुद्वारा बना हुआ है। बताते हैं कि वे 17 सितंबर 1675 को लाखन माजरा में अपने शिष्यों के संग आए थे। वे आनंदपुर साहिब से चलकर जींद के रास्ते यहां आए थे और यहां से दिल्ली गए थे।



24 नवंबर को दिया बलिदान का परिचय

24 नवंबर 1675 को गुरु तेगबहादुर सिंह ने दिल्ली के चांदनी चौक के पास अपना बलिदान दिया था। उन्होंने मुगल सम्राट औरंगजेब के जबरन धर्मांतरण के आदेश का विरोध किया था। परिणाम यह हुआ कि उनका सार्वजनिक रूप से शीश कलम कर दिया गया। जहां पर उनका शीश गिरा था, आज दिल्ली में वहीं पर शीशगंज साहिब गुरुद्वारा बना हुआ है। यदि लाखन माजरा गुरुद्वारा की बात करें तो यहां पर देश आजाद होने से पहले एक कमरे में ही गुरुद्वारा चलाया जा रहा था। उसके बाद भारत पाक विभाजन के बाद विस्थापित होकर यहां आए लोगों ने इसका विस्तार किया। जयदेवदास सिंह ने 1947 में इस गुरुद्वारे का निर्माण करवाया था। 24 अप्रैल 1967 को यहां पर पांच मंजिला इमारत बनाई गई। गुरुद्वारे के साथ ही रामसर नाम का एक पवित्र सरोवर है। हर साल होली के दिन यहां पर होलरा मोहल्ला कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिसमें देश और विदेश से हजारों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। यहां आने वाला प्रत्येक श्रद्धालु सिखों के नौवें गुरु तेग बहादुर सिंह के बलिदान को याद करता है। हरियाणा सरकार द्वारा हिंद की चादर श्री गुरु तेग बहादुर जी के 350वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में कई कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। इनमें 25 नवंबर को कुरुक्षेत्र में एक राज्य स्तरीय मध्य कार्यक्रम का आयोजन शामिल है, जिसमें हजारों की संख्या में संगत भाग लेंगे।



महम। मंजी साहिब गुरुद्वारा लाखन माजरा।

हिंद की चादर की मिली उपाधि

सिखों के 9वें गुरु तेग बहादुर सिंह को हिंद की चादर की उपाधि दी गई है। क्योंकि उन्होंने धर्म, आस्था और मानवाधिकारों की रक्षा के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था। हिंदुस्तान के लिए उन्होंने एक चादर का काम किया था। हिंदुओं के लिए उनका बलिदान खाली नहीं गया। इसी ओट की वजह से उनकी हिंद की चादर कहा गया है।

■ धर्म परिवर्तन के विरोध में खड़े होकर दी थी अपनी शहादत

■ प्रदेश में 'हिंद की चादर' यात्रा निकाली गई, जिसका समापन 25 नवंबर को कुरुक्षेत्र में होगा

बलिदान बना प्रेरणा

गुरु तेगबहादुर सिंह का बलिदान बना प्रेरणा गुरु तेग बहादुर सिंह का बलिदान हिंदू धर्म और मानवाधिकारों की रक्षा के लिए एक प्रेरणा बना। उनके बलिदान ने खालसा पंथ की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिसने गुरु के पुत्र गुरु गोबिंद सिंह के नेतृत्व में धर्मिक और न्याय के लिए संघर्ष का एक शक्तिशाली प्रतीक बनाया। उनके इस बलिदान से यह भी साबित हुआ कि धर्म को जबरन नहीं बदला जा सकता है और इसने मुगल साम्राज्य के खिलाफ प्रतिरोध की ओर मजबूत किया। उनकी शिक्षाएं हमें सामाजिक समानता और सद्भाव बनाने के लिए प्रेरित करती हैं।

गवर्नमेंट कॉलेज मोखरा में विद्यार्थियों को गुरु तेग बहादुर सिंह के बलिदान की घटना से अवगत करवाया

महम। मोखरा गांव में साक्षी मलिक राजकीय महाविद्यालय मोखरा इतिहास विभाग द्वारा एक दिवसीय सेमिनार लगाया गया। इस सेमिनार में विद्यार्थियों को सिखों के नौवें गुरु तेग बहादुर सिंह का जीवन परिचय बताया गया था और उनके बलिदान की घटना की जानकारी दी गई। राजकीय महिला महाविद्यालय रोहतक में इतिहास विभाग के सैनियर प्राध्यापक डॉ. सुभाष बल्हारा ने बताया कि गुरु तेग बहादुर सिंह ने धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाई थी। प्रिंसिपल डॉ. मीनू नेन ने विद्यार्थियों को बताया कि देश विदेश में गुरु तेग बहादुर सिंह का 350वां शहीदी दिवस धूमधाम से मनाया जा रहा है।

मार्केट र्यूज

पी.पी. ज्वेलर्स, रोहतक में नया कलेक्शन लॉन्च, गोल्ड सिल्वर खरीदने का भी सबसे सही समय



रोहतक। पीपी ज्वेलर्स रेलवे रोहतक में अपने शो-रूम में नया गोल्ड और सिल्वर कलेक्शन लॉन्च कर दिया है। नई रेंज ग्राहकों को आकर्षित करती है टेंडेंशियल से लेकर मॉडर्न डिजाइनों तक, हर तरह की परंपरा के लिए यहाँ काफी खूबसूरत विकल्प उपलब्ध हैं। सबसे बड़ी खासियत यह है कि वर्तमान में गोल्ड ज्वेलरी पर सिर्फ 5% मैकिंग चार्जस रखे गए हैं, जिससे ग्राहकों के बजट में शानदार डिजाइनों की खरीदारी और भी आसान हो गई है। बढ़ती हुई मार्केट कीमतों को देखते हुए सिल्वर ज्वेलरी खरीदना इस समय सबसे फायदेमंद माना जा रहा है, क्योंकि सिल्वर के रेट लगातार ऊपर जा रहे हैं। पी.पी. ज्वेलर्स में नई सिल्वर रेंज भी उपलब्ध है, जिसे लेकर खरीदारों में काफी रुचि देखी जा रही है। हर रोज के लिए हल्के गहने हों या शादी-विवाह के लिए प्रीमियम पीसेज। पी.पी. ज्वेलर्स गुणवत्ता, डिजाइन और भरोसे के मामले में ग्राहकों को पहली परंपरा बना हुआ है।



केवीएम स्कूल में दो दिवसीय एनुअल स्पोर्ट्स मीट का हुआ आयोजन

रोहतक। केवीएम स्कूल में दो दिवसीय एनुअल स्पोर्ट्स मीट का आयोजन उत्साह और उमंग के साथ संपन्न हुआ। 21 नवंबर को मुख्य अतिथि डॉ. मनोषा माथना ने परेड और राष्ट्रीय गीत के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। शुरुआती सत्र में प्राइमरी विंग के बच्चों ने मनमोहक सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत कर सभी का दिल जीत लिया। यूकेजी वर्ग की फिल बार्केट एंड रन रेस में रियांश, सलमान और जियांश विजेता रहे। बगाना रेस में यशान, अंश और जीवांश ने प्रथम स्थान हासिल किया। थी लैंग रेस में पूर्वी, अचनी, वीशा, छाया और लक्षिता ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, जबकि रिले रेस में असमी, पूर्वी और लक्षिता की टीम ने बाजी मारी। दूसरे दिन कक्षा 6 से 12वीं तक के छात्रों ने विभिन्न खेलों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। रस्साकशी में 11वीं कक्षा के लड़के प्रथम और 10वीं कक्षा द्वितीय स्थान पर रहे। स्ले साइकिलिंग रेस में हर्ष, आदी और रक्षित कश्यप: प्रथम, द्वितीय और तृतीय रहे। मेडिसिन बॉल प्रतियोगिता में हर्षित, प्रिंस और कुणाल विजेता बने, जबकि लडकियों में जीया, मावी और नेन्सी ने शीर्ष तीन स्थान प्राप्त किए। कबड्डी में भी 11वीं कक्षा की टीम विजेता रही। मातृ अभिभावकों ने माटकी फोड प्रतियोगिता और पुरुष अभिभावकों ने 100 मीटर दौड़ में उत्साहपूर्वक भाग लिया। स्कूल संवाहक कर्मचारी माथना, श्रीमती मीना कौशिक और नदिम प्रिंसिपल ज्योति शर्मा ने विजेताओं को मेडल प्रदान किए। समापन अवसर पर कर्मचारी माथना ने कहा कि जीत-हार से अधिक महत्वपूर्ण खेलों में सहभागिता है। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय गान के साथ हुआ।



रोहतक। बीएमयू में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विजय प्रतियोगिता में छात्रों से प्रश्न करते हुए शिक्षकगण।

बीएमयू में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विजय प्रतियोगिता का किया आयोजन

रोहतक। बाबा मस्तनानाथ विश्वविद्यालय में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विजय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन डॉ. सोनिया (सहायक प्रोफेसर) तथा डॉ. मीनाक्षी (एसोसिएट प्रोफेसर) द्वारा किया गया। जिसका शुभारंभ डॉ. प्रवीण मट्टू, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, भौतिकी विभाग द्वारा किया गया। डॉ. प्रवीण मट्टू ने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिता विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किक सोच तथा प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को विकसित करती है। यह प्रतियोगिता बच्चों की टीम बनाने की गई। जिसमें अनेक छात्रों ने भाग लिया और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित प्रश्नों का उत्तर देकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. मनोज वर्मा, प्रोफेसर एवं डीन, फैकल्टी ऑफ साइंसेज ने की। डॉ. मनोज वर्मा ने विद्यार्थियों के प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से विद्यार्थियों में नवाचार और शोध की प्रेरणा उत्पन्न होती है। इस अवसर पर विभिन्न संकाय से डॉ. सुनीता दहिया (प्रोफेसर), डॉ. रवि राणा (प्रोफेसर), डॉ. विकास भारद्वाज (एसोसिएट प्रोफेसर), डॉ. पल्लवी भारद्वाज (प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, फिजिकल साइंसेज), डॉ. संगीता तथा विज्ञान संकाय के अन्य सभी शिक्षकगण उपस्थित रहे।

राघव स्वामी मैसल कलां तपोस्थली में हवन-यज्ञ व मंडारे का आयोजन

रोहतक। मैसल कलां स्थित शिव मंदिर परिसर में सिद्ध संत राघव स्वामी की पुण्यतिथि पर मध्य संत समागम, हवन-यज्ञ और मंडारे का आयोजन बड़ी श्रद्धा और आस्था के साथ संपन्न हुआ। सुबह से ही क्षेत्र के विभिन्न गांवों से श्रद्धालुओं का ताता लगना शुरू हो गया और हजारों लोगों ने प्रसाद



गहन कर संत की तपोस्थली पर अपना श्रद्धा-नमन अर्पित किया। कार्यक्रम की शुरुआत वैदिक मंत्रोच्चार के साथ हवन-यज्ञ से हुई, जिसमें गुरु परंपरा के दंडी स्वामी सहित कई संतों ने भाग लिया। संतो और ग्रामीणों ने राघव स्वामी को याद करते हुए कहा कि उनकी सीख मानवता, सरलता और समाज-समरसता का दीपक है। उन्होंने बताया कि राघव स्वामी ने जीवनभर सेवा, भक्ति और सद्भाव का संदेश दिया, जो आज भी समाज को मार्ग दिखा रहा है। समागम में मजल-रागनी की मधुर प्रस्तुतियों ने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया। स्थानीय कलाकारों ने राघव स्वामी की जीवन, उपदेशों और प्रेरणादायी प्रसंगों पर आधारित गजनों से श्रद्धालुओं को भावविभोर किया। कार्यक्रम के दौरान डॉक्टरों की टीम द्वारा नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर भी लगाया गया, जिसमें कैसर, पेट, लिवर, बीपी, शुगर और अन्य जांचें की गईं। बड़ी संख्या में लोगों ने इस सुविधा का लाभ उठाया और स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने नियमित जांच के प्रति जागरूक किया।

MANSAROVER HOSPITAL

MULTI SUPER SPECIALITY HOSPITAL

NEAR PNB BANK, OPP. VIKAS NAGAR, SONIPAT ROAD, ROHTAK (Haryana)

Reception : 01262-253500, 9053005599, 9254302848

Latest MRI & Multi Slice CT Scan

20 नवंबर 2025 से 20 फरवरी 2026 तक विशेष छूट

➤ MRI दिमाग एव दिमाग की एंजियोग्राफी (Angiography)	8000	@2500/-
➤ MRI दिमाग एवं दिमाग की वीनोग्राफी (Venography)	8000	@2500/-
➤ MRI दिमाग (Brain) या रीढ़ की हड्डी (Spine) Detail	6000	@1800/-
➤ MRI दिमाग (Brain) या रीढ़ की हड्डी (Spine) Screening	3000	@950/-
➤ C.T. Scan दिमाग (Brain)	2000	@450/-

बाकी सभी टेस्टों पर 50% डिस्काउंट

फौजी भाईयों का इलाज फ्री

Dr. Balkishan Goel

M.B.B.S., M.S., M.CH.
CONSULTANT NEUROSURGEON

ECHS

• हरियाणा सरकार • आयुष्मान भारत

ESIC के पैनेल पर Private TPA

<ul style="list-style-type: none"> • VIDAL HEALTH • HDFC ERGO • IFFCO TOKYO • RELIANCE HEALTH • MEDSAVE • MEDI ASSIST • STAR HEALTH • CARE HEALTH • NAVI HEALTH 	<ul style="list-style-type: none"> • RAKSHA TPA • ICICI LOMBARD • BHARTI AXA • APOLLO MUNICH • NIVA BUPA • BAJAJ ALLIANCE • SBI GENERALINSURANCE • UNIVERSAL SOMPO • ADITYA BIRLA HEALTH
--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

TRAUMA CENTRE, ICU & CRITICAL CARE

• Neuro - ICU, General - ICU, HDU (High Dependency Unit) • जहर Poisoning case

24 Hours Lab/Cafe/Pharmacy/Ambulance

खबर संक्षेप



पंजाब नेशनल बैंक में स्नेहजलि कार्यक्रम शुरू
रोहताक। पंजाब नेशनल बैंक ने सेवानिवृत्त कर्मचारियों और वयोवृद्धों के सम्मान में स्नेहजलि कार्यक्रम की शुरुआत की। मॉडल टाउन शाखा में कार्यक्रम में क्षेत्र के सेवानिवृत्त कर्मचारियों और वरिष्ठ नागरिकों को आमंत्रित कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठजनों से विचार-विमर्श कर बैंक सेवाओं में सुधार के लिए सुझाव भी लिए। शाखा प्रबंधक नेहा शुक्ला ने बताया कि बैंक अपने पूर्व कर्मचारियों के योगदान को बेहद महत्वपूर्ण मानता है।

गुरु तेग बहादुर के शहीदी दिवस पर पुष्पांजलि अर्पित
रोहताक। शिक्षा भारती विद्यालय जेपी कॉलोनी में गुरु तेग बहादुर के शहीदी दिवस पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। हर वर्ष 24 नवंबर को उनके शहीदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज गुरु तेग बहादुर का 350वां बलिदान दिवस मनाया गया। वर्ष 1675 में इसी दिन चांदनी चौक पर उन्होंने धर्म और मानवता की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया था। उनके अद्वितीय साहस के कारण उन्हें हिन्दू की चादर के नाम से भी सम्मानित किया जाता है।

महिला हॉकी टूर्नामेंट का विशेष आयोजन आज
रोहताक। बाबा मस्तनाथ खेल स्टेडियम में आज 4वें महिला हॉकी टूर्नामेंट 2025 का भव्य आयोजन किया जाएगा। यह कार्यक्रम सतीश नंदल (भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष) की माता स्व. शांति देवी एवं पिता स्व. सुमेरु नंदल की 98वीं जयंती के पावन अवसर पर आयोजित किया जा रहा है। आयोजन समिति और बाबा मस्तनाथ हॉकी क्लब द्वारा तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा चुका है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में

एनसीसी यूनिट ने किया पौधरोपण कार्यक्रम
रोहताक। वैश्य महाविद्यालय में वंदे भारत-स्मरणोत्सव के उपलक्ष्य में वैश्य महाविद्यालय की एनसीसी यूनिट द्वारा एक विशेष पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. फूल सिंह यादव द्वारा पौधा लगाकर किया गया। लोफिटनेड डॉ. उन्मेष मिश्र के नेतृत्व में एनसीसी कैडेट्स ने कॉलेज परिसर में मौसम के अनुरूप उपयुक्त पौधों का रोपण किया।

77वां एनसीसी राइजिंग डे उत्साहपूर्वक मनाया
रोहताक। महाराजी किशोरी जाट कन्या महाविद्यालय में 2 हरियाणा गल्स बटालियन एनसीसी की कैडेट्स द्वारा 77वां एनसीसी राइजिंग डे बड़े उत्साह और देशभक्ति के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत कबड्डी प्रतियोगिता से हुई।

धर्म-कर्म गडकर्ण धाम पर श्रीकृष्ण भक्ति के जयघोष से गूँजा पंडाल

कथा का वाचन साक्षी गोपाल दास महाराज ने अपनी मधुर व प्रेरक वाणी में किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहताक

इस्कॉन प्रचार समिति रोहताक द्वारा इस्कॉन कुम्भेश्वर के तत्वावधान में डेरा बाबा लक्ष्मणपुरी महाराज, गडकर्ण धाम, माता दरवाजा रोहताक में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा में रविवार को सैकड़ों श्रद्धालु पहुंचे। इस्कॉन प्रचार समिति के मॉडिया प्रभारी राजीव जैन ने बताया कि कथा के पावन अवसर पर रोहताक के सांसद दीपेंद्र हुड्डा, विधायक भारत भूषण बत्रा, मुख्य यजमान समाजसेवी एवं उद्योगपति दीपक जैन, समाजसेवी जम्बू जैन, जयभगवान बंसल, सुरेंद्र अग्रवाल (बल्लू) तथा समिति के

लगाकर स्वागत किया गया। कथा का वाचन साक्षी गोपाल दास महाराज ने अपनी मधुर, प्रेरक वाणी में किया। उन्होंने भागवत कथा सुनने के महत्व

पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसका श्रवण करने से आत्मिक ज्ञान की प्राप्ति होती है, मन और परिवार को शांति मिलती है तथा पितरों को भी

श्रीमद्भागवत कथा में मौजूद भक्तजन तथा श्रीमद्भागवत कथा में प्रवचन देते साक्षी गोपाल दास महाराज।

प्रधान सुभाष तायल ने भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना कर कथा का शुभारंभ किया। समिति की ओर से सभी अतिथियों का केसर तिलक

रोहताक। श्रीमद्भागवत कथा में मौजूद भक्तजन तथा श्रीमद्भागवत कथा में प्रवचन देते साक्षी गोपाल दास महाराज।

प्रधान सुभाष तायल ने भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना कर कथा का शुभारंभ किया। समिति की ओर से सभी अतिथियों का केसर तिलक

रोहताक। श्रीमद्भागवत कथा में मौजूद भक्तजन तथा श्रीमद्भागवत कथा में प्रवचन देते साक्षी गोपाल दास महाराज।

प्रधान सुभाष तायल ने भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना कर कथा का शुभारंभ किया। समिति की ओर से सभी अतिथियों का केसर तिलक

रोहताक। श्रीमद्भागवत कथा में मौजूद भक्तजन तथा श्रीमद्भागवत कथा में प्रवचन देते साक्षी गोपाल दास महाराज।

प्रधान सुभाष तायल ने भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना कर कथा का शुभारंभ किया। समिति की ओर से सभी अतिथियों का केसर तिलक

रोहताक। श्रीमद्भागवत कथा में मौजूद भक्तजन तथा श्रीमद्भागवत कथा में प्रवचन देते साक्षी गोपाल दास महाराज।

प्रधान सुभाष तायल ने भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना कर कथा का शुभारंभ किया। समिति की ओर से सभी अतिथियों का केसर तिलक

रोहताक। श्रीमद्भागवत कथा में मौजूद भक्तजन तथा श्रीमद्भागवत कथा में प्रवचन देते साक्षी गोपाल दास महाराज।

प्रधान सुभाष तायल ने भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना कर कथा का शुभारंभ किया। समिति की ओर से सभी अतिथियों का केसर तिलक

रोहताक। श्रीमद्भागवत कथा में मौजूद भक्तजन तथा श्रीमद्भागवत कथा में प्रवचन देते साक्षी गोपाल दास महाराज।

प्रधान सुभाष तायल ने भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना कर कथा का शुभारंभ किया। समिति की ओर से सभी अतिथियों का केसर तिलक

रोहताक। श्रीमद्भागवत कथा में मौजूद भक्तजन तथा श्रीमद्भागवत कथा में प्रवचन देते साक्षी गोपाल दास महाराज।

प्रधान सुभाष तायल ने भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना कर कथा का शुभारंभ किया। समिति की ओर से सभी अतिथियों का केसर तिलक

रोहताक। श्रीमद्भागवत कथा में मौजूद भक्तजन तथा श्रीमद्भागवत कथा में प्रवचन देते साक्षी गोपाल दास महाराज।

प्रधान सुभाष तायल ने भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना कर कथा का शुभारंभ किया। समिति की ओर से सभी अतिथियों का केसर तिलक

रोहताक। श्रीमद्भागवत कथा में मौजूद भक्तजन तथा श्रीमद्भागवत कथा में प्रवचन देते साक्षी गोपाल दास महाराज।

प्रधान सुभाष तायल ने भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना कर कथा का शुभारंभ किया। समिति की ओर से सभी अतिथियों का केसर तिलक

रोहताक। श्रीमद्भागवत कथा में मौजूद भक्तजन तथा श्रीमद्भागवत कथा में प्रवचन देते साक्षी गोपाल दास महाराज।

प्रधान सुभाष तायल ने भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना कर कथा का शुभारंभ किया। समिति की ओर से सभी अतिथियों का केसर तिलक

बालाजी रूट पर रोडवेज का बड़ा निर्णय : एक दिन ऑर्डिनरी तो दूसरे दिन एसी बस चलेगी

सीनियर सिटीजनों की परेशानी बनी वजह, अब मिलेगी राहत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहताक

रोडवेज विभाग ने बालाजी रूट पर यात्रियों की सुविधा और मांग के अनुरूप एक बड़ा फैसला लिया है। कुछ समय पहले इस रूट पर एसी बस का संचालन शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य यात्रियों को बेहतर, आधुनिक और आरामदायक सफर प्रदान करना था। हालांकि, एसी बस शुरू होने के बाद कई वरिष्ठ नागरिकों ने किराये को लेकर अपनी समस्याएं

विभाग तक पहुंचाईं। एसी बस में सीनियर सिटीजन के पास मान्य नहीं हो रहे थे, जिसके कारण उन्हें पूरा किराया देना पड़ रहा था। इससे उनकी जेब पर अतिरिक्त वित्तीय बोझ पड़ रहा था। एसी बसों में रियायती पास लागू न होने से वृद्ध यात्रियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। कई बुजुर्ग प्रतिदिन इस रूट से यात्रा करते हैं और ऑर्डिनरी बसों में मिलने वाली रियायत उन पर आर्थिक रूप से काफी निर्भर करती है। एसी बसों में पूरा किराया देना उनके लिए मुश्किल होने लगा था। इस समस्या को देखते हुए स्थानीय लोगों और वरिष्ठ नागरिकों ने विभाग से मांग की



कि या तो एसी बसों में पास लागू किए जाएं या फिर ऑर्डिनरी बसों बहाल की जाएं। शिकायतें बढ़ने और स्थिति की गंभीरता को समझते हुए रोडवेज विभाग ने संतुलित समाधान निकालते हुए नया शेड्यूल लागू किया है। इसके तहत अब बालाजी

आगे भी होंगे सुधार

रोडवेज अधिकारियों ने यह भी स्पष्ट किया है कि आने वाले समय में यात्रियों की प्रतिक्रिया और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए रूट में और बदलाव किए जा सकते हैं। यदि नई व्यवस्था सफल रहती है और यात्रियों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है, तो इससे लंबे समय तक जारी रखा जाएगा। नई व्यवस्था के लागू होने से बालाजी रूट के यात्रियों को काफी राहत मिलने की उम्मीद है। खासकर वरिष्ठ नागरिकों को अब रोजाना मारी किराया नहीं देना पड़ेगा और वे अपनी सुविधा के अनुसार यात्रा कर सकेंगे। और कम आय वाले यात्रियों के लिए राहत लेकर आएगा।

नई व्यवस्था से यात्रियों को दोहरा लाभ मिलेगा

एसी बस वाले दिन उन यात्रियों को बेहतर, सुरक्षित और आरामदायक यात्रा मिलेगी जो थोड़ा अधिक किराया देकर सुविधा पाना चाहते हैं। ऑर्डिनरी बस वाले दिन वरिष्ठ नागरिक, छात्र और दैनिक यात्रियों को रियायती पास का लाभ मिलेगा और उन्हें पुराने किराये पर ही यात्रा करने की सुविधा होगी। रोडवेज अधिकारियों ने बताया कि यह निर्णय यात्रियों की मांग और उनकी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए लिया गया है। विभाग का लक्ष्य है कि सभी वर्गों तक समान रूप से परिवहन सुविधा पहुंच सके।

सफर में नहीं होगी परेशानी

यात्रियों की सुविधा को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है। ताकि उन्हें सफर के दौरान किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े। बार-बार इस तरह की मांग आ रही थी कि एक बस ऑर्डिनरी भी चलाई जाए। उसी के हिसाब से यह निर्णय लिया गया है। -हरराज, संस्थान प्रबंधक, रोडवेज डिप्टो

नवीन जयहिंद से मिले परिजन बोले- झूठ बोलकर आर्मी ज्वाइन करवाई, यूक्रेन युद्ध में

हरियाणा के युवक रूस में फंसे तो प्रदर्शन करने पहुंचे परिजन

60 परिवारों के युवक फंसे हैं रूस में, दो की हो चुकी मौत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहताक

रूस आर्मी में फंसे युवकों के परिजन शनिवार को मानसरोवर पार्क में प्रदर्शन करने पहुंचे। उन्होंने युवकों को वापस लाने की मांग करते सरकार से तत्काल कार्रवाई का आग्रह किया। इस दौरान उन्होंने समाजसेवी नवीन जयहिंद से भी मुलाकात कर मदद मांगी। जयहिंद ने कहा कि वह उनकी आवाज को उठाने के लिए सड़क से लेकर संसद तक विरोध प्रदर्शन करेंगे। साथ ही विपक्ष से भी उनकी आवाज उठाने की मांग करेंगे। परिजनों ने बताया कि हरियाणा के करीब 60 परिवारों के बच्चे स्टडी वीजा पर रूस में गए हुए हैं। जिनके परिवारों ने लाखों रुपए का कर्ज लिया और फिर एजेंट के माध्यम से उन्हें रूस भेजा था। उनका आरोप है कि रूस के एजेंटों ने उन्हें धोखे से आर्मी में भर्ती करवा दिया। इसके बाद उन्हें रूस-यूक्रेन युद्ध में भेज दिया गया। यूक्रेन की रूस द्वारा कब्जाई गई जगह पर उन्हें बंदरों में भेजा गया है, जिनके बारे में परिवार को कोई जानकारी नहीं मिल पा रही है।



दस दिन की ट्रेनिंग देकर भेजा युद्ध में

हिसार के गांव मदनहेड़ी निवासी विकास ने बताया कि उसका भाई सोनू स्टडी वीजा पर 2024 में रूस गया था। करीब साढ़े 7 लाख रुपए लोगों से उधार लेकर रूस भेजा था, लेकिन 3 सितंबर को उन्हें फोन आया कि सोनू ने रूस की आर्मी ज्वाइन कर ली है। विकास ने आरोप लगाया कि एजेंट ने उसके भाई को यह कहकर आर्मी ज्वाइन करवाई कि उसे कुक का काम करना होगा। दाईं लाख रुपए सेलरी पर रूस आर्मी ज्वाइन करने के बाद करीब 10 दिन की ट्रेनिंग दी गई और उन्हें युद्ध में भेज दिया। 3 सितंबर के बाद उनकी सोनू से कोई बात नहीं हुई। 19 अक्टूबर को फोन आया कि सोनू की युद्ध में मौत हो गई है। इसके बाद 29 अक्टूबर को सोनू का शव भारत आया। विकास ने बताया कि शुरू में तो सोनू की पहचान तक नहीं हो सकी, क्योंकि उसका चेहरा जला हुआ था। बाद में वेब नंबर से सोनू की पहचान हुई। उन्होंने सरकार से मांग की कि जो युवा रूस में फंसे हुए हैं, उन्हें भारत लाया जाए, क्योंकि हरियाणा के युवाओं को धोखे से आर्मी ज्वाइन करवाकर युद्ध में मरने के लिए छोड़ा जा रहा है।

जंतर-मंतर पर दे चुके धरना

श्रीमगवान ने बताया कि 3 नवंबर को जंतर मंतर पर धरना दिया था लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही। उनकी मांग है कि संदीप जीवित भारत लौट आए। संदीप के साथ जितने भी लोग रूस में फंसे हुए हैं, उन्हें भी भारत सरकार सुरक्षित वापस लाने के लिए प्रयास करें। जब शवों को भारत लाने का प्रबंध हो सकता है, तो जीवित लोगों को भी लाने का प्रबंध किया जा सकता है।

सीएम नायब सेनी व विपक्ष नेता भूपेंद्र हुड्डा को आवाज उठानी चाहिए

समाजसेवी नवीन जयहिंद ने कहा कि हरियाणा के 60 युवा हैं, जो स्टडी वीजा पर रूस आर्मी में फंसे हुए हैं। उन्होंने कहा अगर रूस को आर्मी में युवाओं की जरूरत है, तो हरियाणा में आकर भर्ती कर लें। धोखाधड़ी से युवाओं को किस देश से सेना में भर्ती किया जा रहा है। नवीन जयहिंद ने कहा कि हरियाणा के सीएम नायब सेनी व विपक्ष के नेता भूपेंद्र हुड्डा के साथ हरियाणा के सभी 15 सांसदों को आवाज उठानी चाहिए, ताकि सभी युवाओं को सुरक्षित भारत लाया जा सके।

नीचे लैंड माइन, ऊपर से ड्रोन का खतरा

श्रीमगवान ने बताया कि संदीप ने फोन पर कहा कि नीचे लैंड माइन और ऊपर ड्रोन का खतरा है। रोशनी भी नहीं कर सकते। खाने के लिए एक सप्ताह दलिया या चिचड़ी मिलती है। संदीप को भारत वापस लाने के लिए सीएम विडो, पीएम, रक्षा मंत्रालय जा चुके हैं।

नांगे से 20 सितंबर के बाद नहीं हुई बातचीत

ऐसे ही गांव तैमूर पुर निवासी श्रीमगवान ने बताया कि उसका भांजा 23 सितंबर 2024 को स्टडी वीजा पर रूस गया था और पढ़ाई के साथ रेस्टोरेंट में नौकरी भी करता था। करीब 10 महीने नौकरी करने के बाद उसे एजेंट मिला, जिसने झूठ बोलकर उसे आर्मी में भर्ती करवा दिया। संदीप को एजेंट ने दाईं लाख रुपए सेलरी व 10 लाख रुपए का एग्जीमेंट बताकर ज्वाइन करवा दिया श्रीमगवान ने बताया कि संदीप को कुक की नौकरी बताई थी। उन्होंने बताया कि रशियन भाषा में एग्जीमेंट था, जिस पर इलाक़ करवाया गए। 3 महीने की ट्रेनिंग कही थी और 10 दिन में ही बंदरों में भेज दिया। बंदरों में 20 सितंबर से एक सप्ताह तक बात हुई।



डीएवी पब्लिक स्कूल में जागरूकता सत्र आयोजित

रोहताक। डीएवी पब्लिक स्कूल कमला नगर 22 नवंबर को बच्चों की सुरक्षा और जागरूकता के उद्देश्य से एक्ट पर एक विशेष सत्र आयोजित किया गया। बहादुरगढ़ कॉलेज के लेक्चरर सतपाल ने बच्चों को प्रोटेक्शन ऑफ विल्ड्रन फ्रॉम सेवयुअल ऑफेंसेस एक्ट के बारे में सरल और प्रभावी तरीके से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह कानून बच्चों को किसी भी प्रकार के लैंगिक शोषण से सुरक्षा प्रदान करता है और कठिन परिस्थिति में उनके लिए एक मजबूत कानूनी सहारा बनता है। सत्र के दौरान बच्चों को उनके अधिकारों, सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श के बारे में विस्तार से समझाया गया। उन्हें बताया गया कि यदि स्कूल आते-जाते या किसी अन्य स्थान पर कोई व्यक्ति उन्हें गलत तरीके से छूने, डराने या दबाव बनाने की कोशिश करता है, तो वे और उनके माता-पिता एक्ट के तहत तुरंत शिकायत दर्ज करा सकते हैं। इस कानून के अनुसार पुलिस और न्यायालय चर्चित कार्रवाई करने के लिए बाध्य हैं। कार्यक्रम के अंत में ध्यानार्चनार्थी रिक्त वर्मा ने बच्चों को सतर्क रहने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि किसी भी अनजान व्यक्ति पर तुरंत भरोसा न करें और कोई भी ऐसा रहस्य जो डर पैदा करे, तुरंत माता-पिता या शिक्षकों से साझा करें। उन्होंने जोर देकर कहा कि अपनी सुरक्षा के लिए आवाज उठाना साहस की निशानी है, न कि कमजोरी।

बीएमयू फैकल्टी में प्रक्रम व खुशी बने मिस्टर और मिस फ्रेशर



रोहताक। बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय में फ्रेशर्स पार्टी के दौरान केक काटते हुए छात्र तथा बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय में फ्रेशर्स पार्टी के दौरान डांस करती छात्राएं। फोटो: हरिभूमि

रोहताक। बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय की इंजीनियरिंग और टेक्नोलॉजी फैकल्टी में फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन कुलपति डॉ. वीएम यादव के मार्गदर्शन में किया गया। जिसमें प्रथम वर्ष के छात्रों ने पूरे आत्मविश्वास और उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम में विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने माहौल को जीवंत बना दिया। छात्रों ने डांस, सिंगिंग और मॉडलिंग जैसे कई मंचीय कार्यक्रमों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। रजिस्ट्रार डॉ. विनोद कुमार ने इस कहा कि फ्रेशर्स पार्टी जैसे कार्यक्रम विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं को प्रस्तुत करने का मौका देते हैं। उन्होंने छात्रों को मेहनत, अनुशासन के साथ अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करने की प्रेरणा दी।

मिस्टर चार्मिंग का खिताब रोजित और मिस चार्मिंग का खिताब पूजा को मिला

परफॉर्मेंस कैटेगरी में मिस्टर बेस्ट परफॉर्मेंस के रूप में आयुष ने बाजी मारी और मिस बेस्ट परफॉर्मेंस के रूप में गुनगुन चुनी गईं। इसके अलावा मिस्टर चार्मिंग का खिताब रोजित को और मिस चार्मिंग का खिताब पूजा को मिला। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय प्रबंधन और फैकल्टी के कई सदस्य उपस्थित रहे, जिनमें रजिस्ट्रार डॉ. विनोद कुमार, डॉ. अरूप गिरी, डीएसडब्ल्यू डॉ. सुधीर, डॉ. मुकेश सिंगला, डॉ. राजीव, डॉ. अजित डूडी, डॉ. बनिता, डॉ. बिजेन्द्र सिंह, डॉ. सुदेश, डॉ. नेहा, डॉ. सोमवीर आर्य, मिस कौर्ति और मिस दीपिका शामिल रहे। सभी ने मंच पर पहुंचकर छात्रों को शुभकामनाएं दीं।

फिनलैंड की विशेषज्ञ मिस रिक्का कोरोसाल्सी ने कराया आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर विशेष सत्र

रोहताक। आईबी स्कूल में शनिवार को फिनलैंड के शहर कुओपियो से पथारी शैक्षणिक प्रशिक्षक मिस रिक्का कोरोसाल्सी द्वारा कक्षा 8 और 9 के विद्यार्थियों तथा विद्यालय के शिक्षकों के लिए कुटिम बुद्धिमत्ता पर एक विशेष सत्र आयोजित किया गया। मिस कोरोसाल्सी ने वैश्विक संदर्भ में बदती भूमिका पर विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि आने वाले समय में यह तकनीक शिक्षण-अधिगम, उद्योगों, स्वास्थ्य सेवाओं और दैनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को किस प्रकार परिवर्तित करेगी।

हरिभूमि बम्पर इनामी योजना-2025 के विजेताओं के नाम

तेरहवां पुरस्कार (सांत्वना पुरस्कार) (151 से 200)

- शंकर लाल पुत्र श्री राम अवतार निवासी गांव हनुमान टाणो, जिला भिवानी
- कार्तिक पुत्र श्री श्याम सुन्दर निवासी वार्ड नं. 6, गांव चांग, भिवानी
- विश्वम्बर पुत्र श्री हरीश चन्द्र निवासी गांव लहलाना जिला भिवानी
- भूप सिंह बलिवंद पुत्र श्री रामगोपाल निवासी मकान नं. 41, चौखम्हा, भिवानी
- श्रेयाश पुत्र श्री संजीव कुमार निवासी अलवेला गली, जैन चौक, भिवानी
- पिवा पुत्र श्री संदीप कुमार निवासी सोसीएसएचएयू, गेट नं.2, हिसार
- पूजा पत्नी श्री विवेन्द्र निवासी गांव नकीपुर जिला भिवानी
- रविन्द्र पुत्र श्री राजपाल निवासी गांव प्रेम नगर, जिला भिवानी
- निखिल कुमार पुत्र श्री सोमबीर निवासी गांव गिरगाना जिला भिवानी
- रोहित पुत्र श्री कुलबीर निवासी गांव प्रेम नगर, जिला भिवानी
- कूलदीप पुत्र श्री करतार सिंह निवासी गांव प्रेम नगर, जिला भिवानी
- संदीप पुत्र श्री सुतत सिंह निवासी गांव प्रेम नगर, जिला भिवानी
- प्रदीप पुत्र श्री हरिचन्द्र निवासी गांव प्रेम नगर, जिला भिवानी
- आकाश दहिया पुत्र श्री कर्मवीर दहिया निवासी वार्ड नं. 3, गांव गिरगाना, जिला भिवानी
- नेहा पत्नी आकाश दहिया निवासी वार्ड नं. 3, गांव गिरगाना, जिला भिवानी
- आकाश पुत्र श्री संजय निवासी ओल्ड बस स्टैंड, गुजरां की टाणो, भिवानी
- जोषीय पुत्र श्री विकास निवासी ओल्ड बस स्टैंड, भिवानी
- अमित पुत्र श्री वैद प्रकाश निवासी ओल्ड बस स्टैंड, गुजरां की टाणो, भिवानी
- नवीन पुत्र श्री प्रदीप अरोड़ा निवासी मकान नं. 219, चिन्नीव कालोनी, भिवानी
- रोहित पुत्र श्री ओम प्रकाश निवासी ओल्ड बस स्टैंड, गुजरां की टाणो, भिवानी
- कंता पत्नी बलबीर शर्मा निवासी इन्द्रान गार्डन के पीछे, बैंक कालोनी, भिवानी
- संदीप पुत्र श्री सुभाष निवासी ननदोह ओल्ड बस स्टैंड, भिवानी
- नीलम देवी पत्नी श्री शोभन कुमार निवासी गांव व डाकखाना गिरगाना, जिला भिवानी
- सोमबीर सिंह पुत्र श्री प्रभाती राम निवासी गांव गिरगाना, वार्ड नं. 3, जिला भिवानी
- प्राची पुत्र श्री विन्द निवासी ओल्ड बस स्टैंड, भिवानी
- मदन लाल पुत्र श्री रामधारी निवासी मकान नं. 582, सेक्टर 13, हुडा, भिवानी
- हाहबीर सिंह पुत्र श्री चन्दनो राम निवासी गांव व डाकखाना गिरगाना, वार्ड नं. 5, भिवानी
- धर्मवीर सिंह पुत्र श्री प्रभाती राम निवासी गांव गिरगाना वार्ड नं.3, जिला भिवानी
- मनोज कुमार पुत्र श्री प्रभाती राम निवासी गांव गिरगाना, जिला भिवानी
- सर्वान पुत्र श्री कर्मवीर निवासी गांव गिरगाना जिला भिवानी
- सुमन देवी पत्नी श्री सोमबीर निवासी वार्ड नं. 3, गांव गिरगाना जिला भिवानी
- रिंक कुमार पुत्र श्री सोमबीर निवासी गांव गिरगाना जिला भिवानी
- सन्तोष देवी धर्मपत्नी कर्मवीर सिंह, दाड़ौली, चरखी दारी
- पूर्वोर्ध सुपुत्र सोमबीर, दाड़ौली, चरखी दारी
- भूपेश सुपुत्र श्री सोमबीर, दाड़ौली, बाढ़ड़ा, चरखी दारी
- श्री आनन्द सुपुत्र प्रभु सिंह, एमसी कॉलोनी, चरखी दारी, तह. जिला चरखी दारी
- श्री भवन कुमार हेमर इंसर, सुपुत्र श्री सुभाष चंद्र, हीरा चौक, बघवना गेट, तह. व जिला चरखी दारी
- श्री दलबीर सिंह सुपुत्र श्री शोभाशर नन्दवार, बिरही कर्वा, तह. व जिला चरखी दारी
- श्री चव भगवान सुपुत्र श्री नरे सिंह, 1344/1, लाल बहादुर शास्त्री नगर, रोहताक
- श्री रामकावर सुपुत्र श्री गुणगुन (पानन्य), गांव व डा. करौंधा, शौतल नगर, रोहताक
- श्रीमति पूजा पत्नी श्री सुनील चावला, म.नं. 304, बड़ा पाना, कलानौर, रोहताक
- श्री धर्मवीर सुपुत्र मीर सिंह, गांव व डा. बलियाणा, तह. सांणला, रोहताक
- श्री योगेश सुपुत्र नरेंद्र, गांव व डा. अजावध, तह. महम, रोहताक
- श्री भास्कर राय सुपुत्र श्री रामचंद्र राय, 824/20, एकात कॉलोनी, रोहताक
- श्री संजय सुपुत्र श्री रामतोषी शर्मा, 1035/1, शास्त्री नगर, रोहताक
- श्री मनमोहन सुपुत्र श्री नरेंद्र चिंदल, गांव व डा. अजावध, तह. महम, रोहताक
- श्रीमति राननोरी पत्नी श्री नरेंद्र कुमार, गांव व डा. अजावध, तह. महम, रोहताक
- श्री नरेंद्र कुमार सुपुत्र श्री महावीर प्रसाद, गांव व डा. अजावध, तह. महम, रोहताक
- श्री अशोक सुपुत्र श्री ओमप्रकाश, अग्रसेन कॉलोनी, रोहताक
- श्री दीपक सुपुत्र श्री अशोक, अग्रसेन कॉलोनी, रोहताक

शेष विजेताओं की सूची अगले अंक में देखें

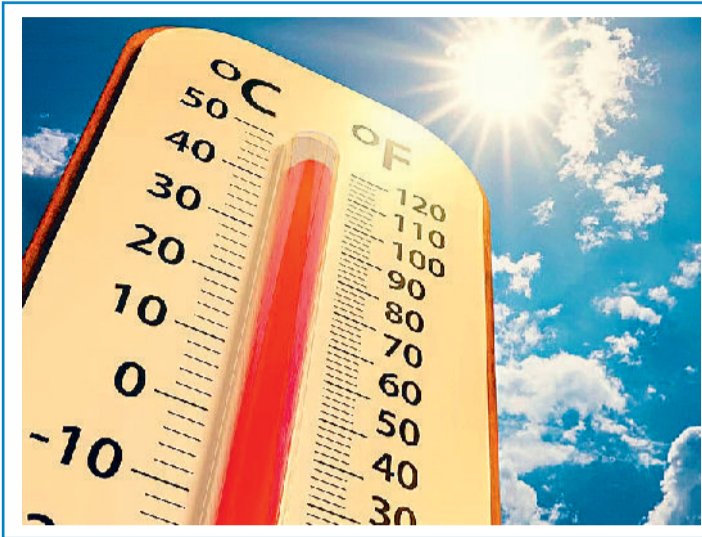
आवश्यक सूचना :

- सभी पुरस्कारों का वितरण 1 दिसंबर 2025 से किया जाएगा।
- पुरस्कार संख्या 1 से 3 तक के विजेताओं को हरिभूमि मुख्यालय, नजदीक इंडस पब्लिक स्कूल, रोहताक से पुरस्कार प्राप्त हो सकेगा।
- पुरस्कार संख्या 4 से 13 उदाहर के विजेताओं को संबंधित हरिभूमि कार्यालय अम्बिका से पुरस्कार प्राप्त हो सकेगा।
- यदि किसी भी पुरस्कार पर सरकार के नियमानुसार टी.डी.एस. लागू होगा तो विजेता को लागू टी.डी.एस. की राशि हरिभूमि कार्यालय में एडवांस में जमा करनी होगी।
- पुरस्कार प्राप्त करने के लिए आपको अपने साथ पुरस्कार विजेता की फोटो आईडी की फोटो प्रति जमा करनी होगी। नूतन प्रति को मिलान हेतु साथ में ताला अतिवारी है।
- अधिक जानकारी के लिए आप निम्न नम्बर पर हरिभूमि प्रसार विभाग में प्रातः 11.00 से सायं 4.00 तक सम्पर्क कर सकते हैं :- फोन :- 9253681019-20

कार्यालय पता :

हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहताक
ऑफिस नं. : 9253681019-20, फोन : 9253681010, 9253681005

बदल रहा मौसम का मिजाज बढ़ती गर्मी-घटती सर्दी



कवर स्टोरी
संजय श्रीवास्तव

सर्दी धीरे-धीरे बढ़ रही है। मौसम विभाग की ताजा भविष्यवाणी के अनुसार आने वाले दिनों में उत्तरी भारत में प्रबल शीत लहर की आशंका है। मौसम विज्ञानियों का कहना है कि इस साल जबरदस्त ठंड पड़ेगी। वजह होगी पर्याप्त वर्षा और अलनीनो प्रभाव। मगर क्या इस दौरान हम कड़कड़ाती सर्दियों वाले दिनों के लंबे दौर भी देखेंगे? यह भी आशंका है कि ठेठ ठिठुरन वाले दिन कुछ कम ही रहेंगे। सर्द रातों और ठंडी हवाओं का कम होना, केवल मौसम का प्रश्न नहीं बल्कि जीवन के संतुलन से भी जुड़ा है। यदि सरकारों ने वैज्ञानिक नीतियों को जनजीवन से जोड़ने की गति नहीं बढ़ाई और आम लोगों ने जरूरी सहभागिता नहीं की तो आने वाले वर्ष 2100 तक भारतीय उपमहाद्वीप का मौसम ऐसा होगा, जहां 'गर्मी ही सामान्य' और 'सर्दी एक दुर्लभ अनुभव' रह जाएगी।

आने वाले वर्षों में घटेगी सर्दी

संयुक्त राष्ट्र संघ एन्वॉयर्नमेंटल पैनल ऑफ क्लाइमेट की रिपोर्ट बताती है कि 1980 से 2020 के बीच यानी चालीस सालों में बेहद ठंडी रातों और अत्यंत सर्द दिनों की संख्या में चार गुना की कमी आई है। ग्लोबल वार्मिंग के चलते जमीनी सतह का तापमान बढ़ने से बाकी दिनों में भी ठंड सामान्य ही रह रही है। ऐसे में घने कोहरे वाले दिन भी साल दर साल घट रहे हैं। यदि मौजूदा रुझान जारी रहा तो साल 2050 तक भारत में भीषण सर्दी वाले दिनों में 60 से 70 प्रतिशत की उल्लेखनीय गिरावट आने और गर्मी वाले दिनों में तीन गुना बढ़ोतरी की आशंका है।

ठंड की अवधि होती जाएगी कम

नेचर पत्रिका के अध्ययन के अनुसार 2080 से 2100 के बीच गर्म दिनों और रातों की घटनाएं सात गुना तक बढ़ेंगी। इस कारण 'कड़ाके की ठंड के दिन' लगभग विलुप्त हो सकते हैं। फिलहाल यह तय है कि अब सर्दियां 'पिछली शताब्दियों जैसी लंबी और स्थायी' नहीं होंगी।

नवगीत
डॉ. नाणिक विदेकरणी 'नवरंग'

बेवा जैसी रातें

दिन पाए हैं ऊसर जैसा
बेवा जैसी रातें
काट रहे हैं हर लम्हे को
वेगन से अक्रुलाते।

गडर उगलते रहे उमेश
समझे जिनको वंदन
व्यर्थ गई पूजा-उपासना
व्यर्थ गया हर वंदन
सारा जीवन रोम कर दिया
फिर भी नहीं अघाते।

रोज हवाएं लाया करतीं
हैं खबरें भड़कीली
छाये हैं आतंक दिलों में
सबके पास है ठीली
ताने मारा करतीं हैं अब
क्रुद्धते आते-जाते।

मुँठ में राम बगल में छुरी
लेकर सब चलते हैं
मान चुके हैं जिनको अपना
उनको भी खलते हैं
पीछे लोग किया करते हैं
किसिम-किसिम की बातें।

ठंड की अवधि कुछ कम और तीव्रता अस्थायी रहेगी। अल्पकालिक मौसमी उतार-चढ़ाव बने रहने के साथ सर्दी में भी कभी-कभी बारिश, गर्मी और पश्चिमी विक्षोभ के जैसे मौसम के अतिरेकी तेवर देखने को मिलेंगे। पांच-सात दशकों के बाद सर्दी का लगभग लोप हो जाना भविष्य के लिए कितना विनाशकारी होगा, इसका अंदाजा भी भयावह है।

बदल रहा है मौसम का चक्र

इस बात के संकेत अब स्पष्ट होने लगे हैं कि हिमालय से लेकर दक्षिण तक मौसम का पारंपरिक चक्र तेजी से बदल रहा है। भारत 'गर्मी प्रधान देश' बनने की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है। उत्तराखंड में कई जगहों पर बीते एक-दो दशकों के बीच तापमान में सामान्यतः तीन डिग्री तक की बढ़त देखी गई है। कर्नाटक यहाँ हाल हिमाचल और कश्मीर का भी है। वैज्ञानिकों के अनुसार भारत में न्यूनतम तापमान प्रति दशक औसतन 0.2 डिग्री सेल्सियस की दर से बढ़ता जा रहा है। इसका मतलब है कि ठंडी हवाएं चलने की अवधि कम होती जा रही है, जबकि गर्म रातें अब लंबी चलती हैं। इसका नतीजा यह है कि मिट्टी में नमी दिन-प्रतिदिन घट रही है। पेड़ कटने से हवा की नमी भी कम हो रही है। उधर जलस्रोत सूख रहे हैं, तो नदियों और पहाड़ी जलस्रोतों का पुनर्भरण कम हो रहा है और इसके चलते वर्षा चक्र अस्थिर हो गया है।

फसलों पर दिख रहा असर

हिमालयी और पर्वतीय राज्यों में इसका असर अब साफ दिख रहा है। सेब, केसर और बागवानी की अन्य फसलें जो ठंडी रात-दिन के अंतर पर निर्भर हैं, उनका उत्पादन गिरने लगा



है। सेब के फूल बिन मौसम खिल जा रहे हैं, तो उनके पकने और रसीले होने के लिए जो कड़क सर्दी चाहिए, वह उनको लगातार कुछ दिनों तक नहीं मिल रही, सो गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ रहा है। किसान अब कम ऊंचाई पर 'ऊष्णकटिबंधीय फसलें', बाजरा और मक्का उगाने को मजबूर हैं, जिससे पहाड़ी कृषि की पारंपरिक पहचान मिटती जा रही है। फूलों और



औषधीय पौधों की जैवविविधता भी खतरों में है, उनकी रासायनिक गुणवत्ता, औषधीय प्रभावशीलता भी कम हो रही है, क्योंकि तापमान बढ़ने से परागण और फूलने का समय असंतुलित हो गया है, उनके रासायनिक संघटक बदल जा रहे हैं।

स्वास्थ्य-पर्यावरण पर पड़ेगा असर

पर्यावरणविद और मौसम विज्ञानी दोनों इस बात पर सहमत हैं कि बदलते मौसम की वजह से नमी विहीन सूखी गर्म हवाओं की अवधि 2050 तक दोगुनी हो सकती है। यह बदलाव खेती किसानों से लेकर जीवन के लिए आवश्यक जैविक सूक्ष्मजीवों के पनपने में असंतुलन तो पैदा करेगा ही, साथ ही कीट-रोगों के फैलाव जैसी समस्याएं भी बढ़ेंगी। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार 2030 तक भारत में गर्मी

हालांकि इस वर्ष आने वाले दिनों के लिए कड़ाके की ठंड पड़ने की संभावना बताई जा रही है। लेकिन जिस तरह से मौसम का मिजाज वैश्विक स्तर पर बदल रहा है, उससे आगामी वर्षों में सर्दी की अवधि और उसकी तीव्रता घटती जाएगी। इसके उलट वर्ष कम होगी और गर्मी की तपिश बढ़ती जाएगी। इसके कई दुष्प्रभाव देखने को मिलेंगे। ऐसे में प्रभावी नीति बनाने के साथ सामूहिक प्रयास भी करने होंगे।

से उपजी बीमारियों से मरने वालों की संख्या तीन गुना बढ़ सकती है। डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियां नए क्षेत्रों में भी पैर पसारेंगी। विशेष रूप से वृद्धजन, बच्चे और मजदूरी करने वाले सबसे अधिक जोखिम में हैं। जाहिर है इस प्रक्रिया से जनधन दोनों को बहुत नुकसान होगा। जंगलों में आग को भी इससे हवा मिलेगी। इस तरह सर्द रातों का घट जाना सिर्फ मौसम परिवर्तन नहीं बल्कि पारिस्थितिक संतुलन के अस्थिर होने का संकेत है।

होगा भारी आर्थिक नुकसान

भीषण सर्दी वाले दिनों के दौर कम होने से पैदा जलवायु असंतुलन का सीधा नुकसान अर्थव्यवस्था और स्वास्थ्य तंत्र पर पड़ेगा। बताते हैं, वैश्विक तापमान में चार डिग्री सेल्सियस का इजाफा, अर्थव्यवस्था को 40 फीसदी कमजोर कर देगा। अनुमान है कि जलवायु आपदाओं के कारण देश को हर साल सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 2 फीसदी तक घट सकता है। अगर दुनिया वैश्विक तापमान में होती वृद्धि को दो डिग्री सेल्सियस पर सीमित रखने में सफल भी हो जाती है, तो इसकी वजह से प्रति व्यक्ति औसत जीडीपी में 16 फीसदी की गिरावट आ सकती है।

बढ़ेंगी प्राकृतिक आपदाएं

घटती सर्दी, बढ़ती गर्मी के कारण श्रम उत्पादकता में कमी, जीडीपी को कम करेगी। फ्लैश फ्लड, बादल फटने एवं बाढ़ तथा भू-स्खलन की घटनाओं की संख्या और भयावहता दोनों बढ़ेंगी तो अवसंरचना को नुकसान होगा। इसका परोक्ष प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। *

बनना होगा एन्वॉयर्नमेंटल कॉन्शस

एन्वॉयर्नमेंटल मैनेजमेंट की ताजा रिपोर्टों ने भारत की जलवायु को लेकर जो गंभीर चेतावनी दी है, उसके प्रति सरकार और जनमानस में कितनी चिंता है, इसके प्रति उनका सरोकार कैसा है यह तो निरुद्ध भविष्य में पता चलेगा। लेकिन अब समय आ गया है कि सरकारों को इसके लिए बहुस्तरीय तैयारी करनी होगी। शहरों में 'ग्रीन बेल्ट' और कृत्रिम-कोरिडोर नीति को अनिवार्यतः लागू करना होगा। पर्वतीय राज्यों में जलवायु अनुकूल कृषि, जल संरक्षण, क्लोसिडर तथा मिग्रेटिंग प्रणालियां बढ़ानी होंगी। शहरी इलाकों में हरित आवरण, वर्षा जल संरक्षण और ऊर्जा दक्ष भवनों को बढ़ावा देना होगा। जलवायु परिवर्तनों को रूढ़ सज्जे वाली फसलों के अनुसंधान को बढ़ावा मिलना चाहिए। जंगलों की कटाई पर रोक लगे। पर्यावरणीय वेतन को प्राथमिकता दिए बिना इस आसन्न संकट से बचाव कठिन है।

लघुकथाएं

कंपोस्ट
समाज सेवा के क्षेत्र में बृजेश जी के योगदान से प्रभावित वह उनसे मिलने उनके घर पहुंचा। लेकिन वहां पहुंचकर उसे बृजेश जी के व्यवहार और जीवनशैली में अलग ही रंग नजर आया।

गेट खुलने में ज्यादा देर नहीं लगी। खोलने वाला अशोक के पेड़ों से पुराना था, सो उसने आदर से अंदर आने के लिए कहा। अंदर घुसते ही मकान के वैभव से थोड़ी चमत्कृत-सी आंखें इधर-उधर टोहने लगीं तो बृजेश जी अपने बगीचे के एक कोने में खड़े नजर आए। शाम के छह बज रहे थे। एयर कंडीशनर की ठंडी हवा खाने के अरमान को जब करते हुए मैंने बृजेश जी का अधिवादन किया और अपने चेहरे पर उभर आया पसीना पोखते हुए यह बोल ही दिया, 'बृजेश जी!

इतनी गर्मी में घर से बाहर यहां?'
'अरे! आओ-आओ मित्र! हम तो सेवक ठहरे। हमारे लिए क्या गर्मी बर्मी, वैसे कंपोस्ट बना रहे है। सरकार तो अब जागी है, हम तो कब से पर्यावरण के लिए प्रयासरत हैं।' उन्होंने सर्गव कहते हुए अपने सामने खोदिए गए लगभग तीन फीट गहरे हुए ढाई फीट चौड़े एक गड्ढे की ओर संकेत किया। तभी घर के अंदर से उनका बावर्ची एक थाली में सब्जियों और फलों के ढेर सारे छिलके लाया और उस गड्ढे में डाल कर चला गया। तब तक माली बगीचे से बटोरी सूखी पत्तियां ले आया था। उसने वो पत्तियां उस गड्ढे में डालीं और फिर बृजेश जी के इशारे पर उस पर मिट्टी की एक मोटी परत लगा दी।
'ये जैविक कचरा भी न, बड़े काम का होता है। ये जो लहलहाती बगिया देख रहे हो न, ये इसी से बनी कंपोस्ट का कमाल है।' बृजेश जी मुझे बताने लगे। तभी, उनके सेक्रेटरी ने एनजीओ के किसी विदेशी दानकर्ता के कॉल पर होने की सूचना देते हुए फोन उनके हाथों में पकड़ा दिया। वो फोन पर बात करते हुए 'हे.हे.' करते हंस रहे थे और मेरी नजर बगिया से हटकर अब उनकी आलीशान कोठी पर टिक गई थी। *

- शोभना श्याम

हम जैसा भोजन करते हैं, उससे हमारे स्वास्थ्य पर ही नहीं पर्यावरण पर भी असर होता है। कई स्टडीज में साबित हुआ है कि प्लांट बेस्ड डाइट हैबिट, हमारी हेल्थ और पर्यावरण को सुरक्षित रखने में बहुत मददगार साबित हो सकता है। इस बारे में जानिए।

प्लांट बेस्ड डाइट हैबिट

स्वस्थ जीवन-सुरक्षित पर्यावरण

जीवनशैली
नोनिका सिन्हा

आज की तेज रफ्तार जीवनशैली में जहां जंक फूड, नॉनवेज फूड्स और अत्यधिक प्रिजर्व्ड फूड्स हमारी थाली का हिस्सा बन चुकी हैं, वहीं वैज्ञानिक शोध बार-बार यह सिद्ध कर रहे हैं कि प्लांट आधारित भोजन यानी पौधों से उत्पन्न होने वाली डाइट, हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है। यह न केवल शरीर को पोषण देता है बल्कि गंभीर बीमारियों जैसे कैंसर, मधुमेह और हृदय रोगों का जोखिम भी काफी हद तक कम करता है।

स्टडीज में हुआ खुलासा: जुलाई 2024 में वी. वियालोन और उनके सह-लेखकों द्वारा प्रकाशित एक वैज्ञानिक रिपोर्ट में यह बताया गया कि जिन लोगों की जीवनशैली में धूम्रपान, अत्यधिक शराब सेवन, असंतुलित खान-पान और अनियमित नींद जैसी आदतें शामिल नहीं थीं, उनमें टाइप 2 डायबिटीज, कैंसर और हृदय संबंधी रोगों का खतरा बहुत कम पाया गया। यह अध्ययन 'स्वस्थ जीवनशैली सूचकांक' पर आधारित था और इसका उद्देश्य यह समझना था कि व्यक्ति की आदतें उसके दीर्घकालिक स्वास्थ्य पर कितना प्रभाव डालती हैं।

कई बीमारियों से बचाव: प्लांट बेस्ड डाइट के फायदों को जानने की दिशा में किए गए डॉ. डी सुब्रमणियन के एक रिसर्च पेपर में यह बताया गया कि पौधों पर आधारित आहार लेने वाले लोगों में कैंसर और हृदय संबंधी बीमारियों का खतरा बहुत कम होता है। इस अध्ययन में डेनमार्क, दक्षिण कोरिया, स्पेन और ब्रिटेन सहित कई देशों के लगभग चार लाख लोगों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। शोधकर्ताओं ने पाया कि जो लोग फलों, सब्जियों, साबुत अनाज, दालों और मेवों पर आधारित भोजन लेते हैं, उनमें 'मेटाबॉलिक सिंड्रोम' अर्थात्

एक साथ दो या अधिक दीर्घकालिक बीमारियों का खतरा, काफी घट जाता है। शोध में यह भी पाया गया कि प्लांट आधारित आहार इंसुलिन प्रतिरोध को कम करता है, जिससे शरीर में ग्लूकोज का स्तर नियंत्रित रहता है और मेटाबॉलिक बीमारियों पर काबू पाया जा सकता है।

कई पोषक तत्वों से होता है भरपूर: पौधों पर आधारित आहार उच्च फाइबर, विटामिन, खनिज और एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होता है, जो शरीर को बीमारियों से लड़ने की शक्ति देता है और कोशिकाओं को क्षति से बचाता है। अध्ययन से यह भी सिद्ध हुआ कि जो लोग नियमित रूप से फल, सब्जियां और अनाज का सेवन करते हैं, उनमें बीपी, कोलेस्ट्रॉल, स्ट्रोक, हृदयाघात और टाइप 2 डायबिटीज जैसी बीमारियों का खतरा बहुत कम होता है।

होता है ईकोफ्रेंडली: प्लांट आधारित भोजन का एक और बड़ा लाभ यह है कि यह पर्यावरण की दृष्टि से भी अत्यंत उपयोगी है। मीट, मछली और अंडे जैसे पशु आधारित भोजन की तुलना में पौधों पर आधारित भोजन से ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बहुत कम



होता है। इसका सीधा संबंध जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संतुलन से है। हालांकि वैज्ञानिक दृष्टि से मेटिटेरेनियन आहार को दुनिया के कई देशों में स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है, परंतु उसमें मछली और चिकन का उपयोग होता है। इसके विपरीत वीगन आहार में किसी भी पशु उत्पाद यहां तक कि दूध का भी उपयोग नहीं किया जाता। इस दृष्टि से प्लांट आधारित या वीगन आहार स्वास्थ्य के साथ-साथ नैतिक और पर्यावरणीय दृष्टि से भी अधिक उपयुक्त माना जाता है।

करना चाहिए प्रोत्साहित: अगर हम भारत की बात करें तो यहां लगभग 35 प्रतिशत लोग शाकाहारी हैं। वे अनाज, दालें, फल और सब्जियों को अपने भोजन में नियमित रूप से शामिल करते हैं। इनमें से कुछ लोग दूध और दूध उत्पाद भी लेते हैं, जबकि लगभग



10 प्रतिशत लोग पूरी तरह वीगन डाइट लेते हैं। हालांकि चिंता की बात यह है कि भारत की शहरी आबादी का लगभग 16 प्रतिशत हिस्सा मधुमेह से पीड़ित है और ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्री डायबिटीज के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। धूम्रपान, तंबाकू सेवन, अस्वस्थ खान-पान और शारीरिक निष्क्रियता इस समस्या को अपने गंभीर बना रही है। अब समय आ गया है कि हमारे नीति निर्माता, स्वास्थ्य विशेषज्ञ और आम नागरिक प्लांट आधारित आहार के महत्व को समझें। विद्यालयों, कार्यस्थलों और अस्पतालों में प्लांट आधारित भोजन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। लोगों को यह बताया जाना आवश्यक है कि मांस और तले हुए भोजन की जगह ताजे फल, सब्जियां, दालें और साबुत अनाज को अपनी थाली में शामिल करना फायदेमंद है। वर्तमान समय में जब जीवनशैली से जुड़ी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं, ऐसे में प्लांट आधारित भोजन केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन की आवश्यकता है। यह न केवल रोगों से बचाव करता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और नैतिक जीवनशैली की दिशा में भी एक सशक्त कदम है। अब समय है कि हम अपने भोजन के प्रति सचेत हों। प्लांट आधारित भोजन को अपनाकर हम न केवल अपना स्वास्थ्य सुधार सकते हैं, बल्कि धरती को भी अधिक सुरक्षित और संतुलित बना सकते हैं। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

प्रकृति से आबद्ध काव्याभिव्यक्तियां

वर्तमान हिंदी काव्य परिदृश्य में ज्ञानेंद्रप्रति, वरिष्ठतम पीढ़ी के प्रतिष्ठित कवियों में शामिल हैं। वह जीवन-संवेदना की जिस भावभूमि पर उतरकर कविता रचते हैं, उनकी अभिव्यक्ति दार्शनिक आख्यान बन जाती है। इस बात को प्रमाणित करती हैं, हाल में छप कर आए उनके नवीनतम कविता संग्रह 'प्रकृति और कृति' की कविताएं। यहां उनकी कविताओं में प्रकृति के तमाम घटक सहजता से आवाजाही करते हैं और हमें कुदरत को देखने का सर्वथा नवीन दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। 'तुम चले गए/और तुम्हारे साथ मेरे जीवन का संगीत चला गया।' (एक चिड़े के लिए अशोक गीत) और 'निफूले जीवन में भी/किसी फूल की सुगंध उठकर/नधुनों तक आती है/कभी कभी' (चुचुचाप) जैसी पंक्तियां इस बात का सपनता से अहसास कराती हैं कि प्रकृति से दूर होकर हमारा जीवन, निरंतर जीवंतता खोता जा रहा है। कितने मनोहारी और आनंदमयी अनुभूतियां से हम वंचित होते जा रहे हैं। कुछ कविताओं में वे विकृत अलग तेवर में अपनी बात को पूरी सशक्तता से हमारे सामने रखते हैं। 'कितानें मनुष्यता की रीढ़ को उदर हड्डी बन चुकी है/ कोई भी अमानुषिक ताकत जिस श्वेत-विक्षत कर ले/क्षेत्र नहीं कर सकती।' (मनुष्यता की रीढ़) *

पुस्तक: प्रकृति और कृति (कविता संग्रह), रचनाकार: ज्ञानेंद्रप्रति, मूल्य: 350 रुपये, प्रकाशक: राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

सच्चाई

देखो नीलिमा, मुझे गांव जाना ही पड़ेगा। पिताजी इस दुनिया में नहीं रहे। उनके अंतिम संस्कार में तो नहीं जा पाया था लेकिन अब तेरहवीं में तो कम से कम जाना ही पड़ेगा। अरे भई, दुनिया को दिखाने के लिए जाना ही पड़ेगा। वरना लोग मुझे क्या कहेंगे? तुम बेबी के बर्थ-डे पार्टी को अच्छी तरह अरेंज कर लेना।

तभी आठ वर्षीया बेबी वहां दौड़ती हुई आई और पापा से लिपटते हुए बोली, 'पापा आप कहां जा रहे हैं, मेरी बर्थ-डे पार्टी में आप नहीं रहेंगे क्या?'

यह सुनकर नीलिमा ने क्रोध भरे स्वर में कहा, 'तुम्हारे पापा अपने पिताजी की मरनी में जा रहे हैं। इन्हें तो हमारी कोई फिक्र ही नहीं है। अरे ऐसे व्यक्ति के मरने-जीने से हमें कोई मतलब नहीं रखना चाहिए। तुम्हारे पिताजी ने अपनी पूरी जमीन-जायदद तुम्हारे छोटे भाई के नाम कर दी। तुम्हें क्या मिला? फिर भी तुम पिता की तेरहवीं में जाने के लिए परेशान हुए जा रहे हो।' अपने दादाजी के लिए मम्मी के मुंह से कटु वचन सुनकर बेबी को अच्छा नहीं लगा। वह रोते हुए अपनी मम्मी से बोली, 'दादाजी कितने अच्छे थे। एक बार यहां आए थे तो मुझे और चीकू भैया को कितना प्यार करते थे। हमें अच्छी-अच्छी कहानियां सुनाया करते थे। मैं भी पापा के साथ गांव जाऊंगी।'

नीलिमा ने गुस्से में कहा, 'बेबी तुम कहीं नहीं जाओगी। तुम्हारा बर्थ-डे है न। गांव में तुम्हारे पापा, चाचा सब देख लेंगे।'

'मम्मी, आप इसलिए नाराज हो न दादाजी से कि उन्होंने पापा को जमीन नहीं दिया। चाचू को सब दे दिया। पर दादाजी क्या करते। आप लोग तो दादाजी को यहां बुलाते भी नहीं थे, न ही आप उनसे मिलने जाते थे। चाचू तो दादाजी को हॉस्पिटल ले जाते थे, उनकी अच्छी तरह देखभाल करते थे।'

कुछ ठहरकर बेबी ने बड़ी मासूमियत से पूछा, 'मम्मी, क्या पापा के मरने पर चीकू भैया भी नहीं आएंगे?' यह सुनकर बेबी के मम्मी-पापा अवाक रह गए। *

-डॉ. शैल चंद्रा



वाहनों के प्रदूषण से मुक्त माथेरान, महाराष्ट्र

टूरिस्ट प्लेसेस
शिखर चंद जैन

अगर आप शहरी भीड़-भाड़, शोरगुल और भाग-दौड़ से कुछ दिनों की छुट्टी चाहते हैं तो इस बार सर्दी की छुट्टियों में रुख करिए कुछ अल्पज्ञात मगर शांत, प्रकृति की गोद में बसे हरे-भरे विंटर डेस्टिनेशंस की ओर। यहां आपको सुकून और शांति का अहसास होगा।

हरा-भरा शीतलाखेत, उत्तराखंड: उत्तराखंड के अल्मोड़ा में स्थित शीतलाखेत एक खूबसूरत हिल स्टेशन है। यह हिमालयी गांव अपने मनोरम कुमाऊं दृश्यों और शांत माहौल के लिए जाना जाता है। शीतलाखेत, प्रसिद्ध टूरिस्ट प्लेस रानीखेत के पास स्थित एक उभरता हुआ पर्यटन स्थल है। इस क्षेत्र में आने वाले मुख्य पर्यटक ट्रेकर्स ही होते हैं। यहां की सभी गतिविधियां पर्यावरण के अनुकूल होती हैं। शहरों के लोग वहां के प्रदूषण से दूर, एक सुकून भरी छुट्टी बिताने के लिए शीतलाखेत आते हैं।



हरा-भरा हिल स्टेशन शीतलाखेत, उत्तराखंड

कश्मीर जैसा दरिगाबाड़ी, ओडिशा: दरिगाबाड़ी, ओडिशा के पूर्वी घाट का एक हिस्सा है, जो कंधमाल जिले में स्थित है। यह राजधानी भुवनेश्वर से 251 किलोमीटर दूर है। यह हिल स्टेशन छोटी-छोटी हरी-भरी पहाड़ियों, नदियों और झरनों से भरा है। इस क्षेत्र में चीड़ और साल के पेड़ बहुतायत में हैं। यहां आपको कॉफी के बागान भी देखने को मिलेंगे। दरिगाबाड़ी को प्राकृतिक सुंदरता के कारण ओडिशा का कश्मीर कहा जाता है। यह ओडिशा के ग्रीन कूल पर्यटन स्थलों का नया चेहरा है। प्रकृति के संरक्षण के लिए यहां कई पार्क और रिजर्व बनाए गए हैं। स्थानीय समुदायों ने पर्यटकों को क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों के बारे में बताने के लिए जगह-जगह प्रकृति शिविर बनाए हैं। सर्दियों के शुरुआती महीने, दरिगाबाड़ी घूमने के लिए आदर्श समय माना जाता है।

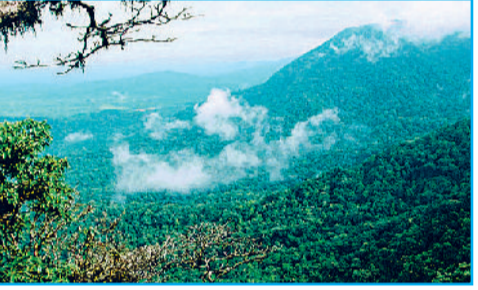
दक्षिण का चेरामुंजी अगुबे, कर्नाटक: कर्नाटक के शिमोगा जिले में स्थित, अगुबे एक छोटा-सा गांव है। इसे दक्षिण भारत का चेरामुंजी भी कहा जाता है। जैव विविधता से

भरपूर इस क्षेत्र में दक्षिण भारत में सबसे ज्यादा वर्षा होती है और भारत में दूसरी सबसे ज्यादा वार्षिक वर्षा होती है। यह हिल स्टेशन मनोरम सुंदरता और ट्रेकिंग ट्रेल्स से भरपूर है। यह अंतिम जीवित निचले वर्षा वनों में से एक है। अगुबे ही टीवी धारावाहिक 'मालगुडी डेज' में भारत के बेहद प्रसिद्ध काल्पनिक शहर मालगुडी का वास्तविक दृश्य था। यह मिरिस्टिका, लिस्टेसिया, गार्सिनिया, डायोस्पायरोस, यूजेनिया आदि औषधीय पौधों की कुछ दुर्लभ प्रजातियों का घर है। इसलिए इसे 'हसिर होन्नु' उपनाम मिला है, जिसका अर्थ है हरा सोना।



कश्मीर जैसी मनमोहक वादियों वाला दरिगाबाड़ी, ओडिशा

एक विशाल वर्षा वन और विविध वनस्पतियों और जीवों का घर होने के कारण, अगुबे में अगुबे वर्षावन अनुसंधान केंद्र स्थित है। यह भारत का सबसे पुराना मौसम केंद्र है, जो वर्षावन क्षेत्रों में होने वाले



भरपूर बारिश के लिए प्रसिद्ध अगुबे, कर्नाटक

किसी भी बदलाव पर विशेष नजर रखता है। अगुबे को 'कोबरा राजधानी' भी कहा जाता है क्योंकि यहां बड़ी संख्या में कोबरा पाए जाते हैं। **वाहन मुक्त माथेरान, महाराष्ट्र:** महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में पश्चिमी घाट की सहाय्यी पर्वत श्रृंखलाओं के बीच स्थित माथेरान एक आकर्षक और लोकप्रिय हिल स्टेशन है। समुद्र तल से लगभग 2,625 फीट की ऊंचाई पर बसा यह स्थान अपनी प्राकृतिक सुंदरता, शांत वातावरण और प्रदूषण मुक्त पर्यावरण के लिए जाना जाता है। माथेरान को एशिया का एकमात्र ऑटोमोबाइल मुक्त (वाहन-मुक्त) हिल स्टेशन होने का गौरव प्राप्त है, जिसका अर्थ है कि यहां किसी भी प्रकार के मोटर वाहन प्रतिबंधित हैं। यहां पर्यटक पैदल, घोड़ों पर या

किंग जॉर्ज पॉइंट अपनी प्राकृतिक सुंदरता और शांत वातावरण के लिए जाने जाते हैं। यहां मौजूद शालोट लेक एक शांत झील है, जिसके आस-पास लोग खूब पिकनिक मनाने आते हैं। माथेरान की यात्रा का मुख्य आकर्षण नेरल से माथेरान तक चलने वाली प्रसिद्ध नेरो-गेज 'टॉय ट्रेन' है। लगभग 21 किलोमीटर लंबी यह रेल यात्रा घने जंगलों और घुमावदार रास्तों से होकर गुजरती है, जो यात्रियों को एक अद्भुत और यादगार अनुभव देती है। माथेरान मुंबई से लगभग 100 किमी और पुणे से 120 किमी की दूरी पर स्थित है। निकटतम रेलवे स्टेशन नेरल है, जहां से टॉय ट्रेन या टैक्सियों द्वारा माथेरान के प्रवेश द्वार तक पहुंचा जा सकता है। प्रकृति प्रेमियों और शहर की भाग-दौड़ से दूर शांति की तलाश करने वाले पर्यटकों के लिए, माथेरान एक परफेक्ट डेस्टिनेशन है।

सबसे बड़ा नदी द्वीप माजुली, असम: माजुली, असम में ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप है। माजुली और राज्य की राजधानी गुवाहाटी के बीच की दूरी 347 किलोमीटर है। यहां मौजूद ग्रामीण भारत के मनोरम दृश्य दुनिया भर के लोगों को आकर्षित करते हैं। यह द्वीप एक प्रदूषण-मुक्त क्षेत्र है। माजुली द्वीप हाल ही में सुविधियों में आया था क्योंकि तेज कटाव के कारण यह डूबने की कगार पर पहुंच गया था। स्थानीय सरकार ने द्वीप पर एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की है। प्राकृतिक सुंदरता के अलावा, इस द्वीप में कई सांस्कृतिक और धार्मिक इमारतें भी स्थित हैं।

चाहिए। पहले 15 से 20 दिन में लगातार सिंचाई करनी चाहिए। जनवरी से जून के बीच जब फल लगने का समय होता है, उस समय इस पेड़ को लगातार सिंचना चाहिए, नहीं तो फल सूखकर गिर जाते हैं। पेड़ के इर्द-गिर्द मलचिग करनी चाहिए ताकि नमी बनी रहे और खरपतवार न बने। **किसानों के लिए है फायदे का सौदा:** एवोकेडो की बढ़ती मांग के कारण आज इसका बाजार मूल्य 300 से 400 रुपए प्रति किलो तक पहुंच गया है। यही कारण है कि एवोकेडो की फसल भारत में किसानों के लिए फायदेमंद 'कैश क्रॉप' रूप में उभरी है। आमतौर पर एवोकेडो का पेड़ तीन से चार साल के बीच में फल देना शुरू कर देता है। अच्छी तरह विकसित एवोकेडो का एक पेड़ औसतन 80 से 150 किलोग्राम फल हर वर्ष देता है। अगर एक एकड़ में एवोकेडो की 100 पेड़ लगा लिए जाएं तो किसान को हर साल औसतन 2 से 8 लाख रुपए की कमाई आसानी से हो सकती है।

विशिष्ट पेड़
वीना गौतम

एवोकेडो (वानस्पतिक नाम-पर्सिया अमेरिकाना) मूल रूप से मध्य अमेरिका, विशेष रूप से मैक्सिको, ग्वाटेमाला और पेरू में पाया जाने वाला पेड़ है, जो सन 1900 के आस-पास भारत में अंग्रेजों के जरिए आया था। तब से कई दशकों तक यह एक सजावटी फल के रूप में केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक तक ही सीमित रहा। 60 के दशक के बाद से लोगों ने इसके महत्व को जानना-समझना शुरू किया। अपनी न्यूट्रीशन वैल्यू के कारण एवोकेडो का फल सुपरफूड के रूप में दिनों-दिन विख्यात होता गया और इसकी डिमांड दिन-ब-दिन बढ़ती गई। **अनुकूल भौगोलिक स्थितियां:** एवोकेडो लगभग 18 से 28 डिग्री सेंटीग्रेड यानी मध्यम तापमान वाले वातावरण में अच्छी तरह फूलता-फलता है। इसलिए इसे उत्तर और मध्य भारत के ऐसे इलाकों में उगाया जा सकता है, जहां कड़ी ठंड या भीषण गर्मी नहीं पड़ती। मसलन

स्वास्थ्य-आर्थिक लाभ
दिलाए एवोकेडो का पेड़



उत्तराखंड के हलद्वानी, काशीपुर, उधमसिंह नगर आदि में इसकी खेती की जा सकती है। इसके अलावा हिमाचल के निचले हिस्सों में, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ इलाकों में एवोकेडो की खेती की जाती है। **ध्यान रखने योग्य बातें:** एवोकेडो का पौधा फरवरी-मार्च या अगस्त-सितंबर के बीच रोपना

इंवेशन
डॉ. दीपक कोहली

आज विज्ञान और नवाचार का युग है। बदलते परिवेश में जब पूरी दुनिया ऊर्जा संकट, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन की गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है, तब वैज्ञानिक नई दिशाओं की खोज में जुटे हैं। इसी खोज की परिणति है, कृत्रिम पत्ता या आर्टिफिशियल लीफ। यह एक ऐसा आविष्कार है, जो मानव सभ्यता को स्वच्छ, सस्ती और टिकाऊ ऊर्जा प्रदान करने की दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है। पेड़ों के हरे पत्ते के प्रकाश की ऊर्जा को उपयोग में लाते हुए कार्बन डाइऑक्साइड और जल से भोजन बनाते हैं, तो उस प्रक्रिया को प्रकाश संश्लेषण कहा जाता है। इस प्रक्रिया में सूर्य की ऊर्जा रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित हो जाती है। यही सिद्धांत आर्टिफिशियल लीफ का आधार बना। यह एक ऐसा उपकरण है, जो सूर्य की किरणों की सहायता से जल को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित करता है। **ऐसे करता है काम:** आर्टिफिशियल लीफ या कृत्रिम पत्ते का ढांचा सामान्य पत्ते जैसा ही होता है, किंतु इसमें विशेष प्रकार के प्रकाश-संवेदी पदार्थ और उत्प्रेरक धातुएं लगाई जाती हैं, जो सूर्य की ऊर्जा को अवशोषित कर रासायनिक अभिक्रियाएं प्रारंभ करती हैं। इस प्रक्रिया में जब सूर्य का प्रकाश कृत्रिम पत्ते पर पड़ता है, तो यह जल के अणुओं को विभाजित कर देता है।

ग्रीन एनर्जी का फ्यूचर
आर्टिफिशियल लीफ



टोक्यो विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने भी इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया। **भारत में भी हो रहे अनुसंधान:** भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के वैज्ञानिकों ने एक ऐसा कृत्रिम पत्ता विकसित किया है, जो बहुत कम सूर्य प्रकाश में भी काम कर सकता है। यह पानी से हाइड्रोजन उत्पन्न करता है। इसी प्रकार भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलूरु ने कृत्रिम पत्तों में नैनो-प्रौद्योगिकी का उपयोग कर उनका कार्यक्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि की है। उनके द्वारा विकसित कृत्रिम पत्ते पर्यावरणीय कारकों, जैसे तापमान और आर्द्रता के बावजूद स्थिर रहते हैं। इसके साथ ही राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली और राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे भी इस दिशा में निरंतर कार्यरत हैं। **भविष्य के लिए उपयोगी:** आज दुनिया की सबसे बड़ी चुनौती है, ऊर्जा का बढ़ता हुआ उपभोग और घटते पारंपरिक स्रोत। कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे स्रोत सीमित हैं और प्रदूषण के बड़े कारण भी। इसके विपरीत, आर्टिफिशियल लीफ सूर्य की असीम ऊर्जा का उपयोग करती है, जो निःशुल्क और अनंत है। यदि इस तकनीक का बड़े पैमाने पर उत्पादन और उपयोग संभव हो सका, तो आने वाले समय में हर घर स्वयं अपनी ऊर्जा उत्पन्न कर सकेगा।

मविष्ट में ग्रीन एनर्जी उत्पादन में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है आर्टिफिशियल लीफ। इस दिशा में देश-विदेश में लगातार प्रयोग किए जा रहे हैं। इस बारे में आप भी जानिए।

जलेबी बहुत लोकप्रिय मिठाई है, जो देश के कई इलाकों में खूब पसंद की जाती है। लेकिन इससे कई गुना बड़ा और भारी जलेबा कुछ ही स्थानों पर मिलता है। जलेबी और उसके बड़े भाई जलेबा से जुड़ी कुछ रोचक बातें।

जलेबी बहुत लोकप्रिय मिठाई है, जो देश के कई इलाकों में खूब पसंद की जाती है। लेकिन इससे कई गुना बड़ा और भारी जलेबा कुछ ही स्थानों पर मिलता है। जलेबी और उसके बड़े भाई जलेबा से जुड़ी कुछ रोचक बातें।

रसभरी जलेबी का
बड़ा भाई जलेबा

रोचक

अभिव्यक्ति त्रिवेदी

जलेबी तो आप सभी ने जरूर खाई होगी। बाहर से कुरकुरी और भीतर से रसभरी जलेबी भला किसे पसंद नहीं होगी। लेकिन क्या आप जानते हैं जलेबी का एक भाई भी है, जिसे कहते हैं जलेबा।



पहले बात जलेबी की: जलेबी हर वर्ग के लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय व्यंजन है। स्वाद में मीठी, कुंडलाकार जलेबी भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान, ईरान के साथ लगभग सभी अरब देशों में खाई जाती है। जलेबी के इतिहास की बात करें तो इसकी शुरुआत किसी इस्लामिक देश से मानी जाती है। मध्यकालीन किताब 'किताब-अल-तबीक' में भी 'जलाबिया' नामक मिठाई का उल्लेख मिलता है, जो अरबीक शब्द है। फारसी में इसे 'जलिबिया' कहते हैं। 10वीं शताब्दी की अरबीक पाक कला किताब में भी 'जुलुबिया' बनाने की कई रेसिपीज का उल्लेख मिलता है। इतिहासकारों की मानें तो जलेबी 500 साल पहले, जब तुर्की आक्रमणकारी

गुजरात में 'जलेबी-फाफड़ा' नाश्ते के तौर पर बहुत प्रचलित है। भारत की तरह ही, पाकिस्तान, बांग्लादेश, ईरान और कई अरब देशों में भी जलेबी को बहुत पसंद किया जाता है। **ऐसे बनाते-खाते हैं जलेबी:** जलेबी बनाने में मैदा, यीस्ट यानी खमीर, घी या तेल, शक्कर और पानी का इस्तेमाल किया जाता है। इनके अलावा पनीर जलेबी, आलू की जलेबी, मावा-खोया जलेबी आदि कई प्रकार की जलेबियां मार्केट में उपलब्ध हैं। कई शहरों में इसे पोहा-जलेबी, रबड़ी जलेबी, दूध-जलेबी आदि कई तरह से खाया जाता है।

भारत आए थे तब, हिंदुस्तान में पहुंची थी। जुलुबिया, जो अब जलेबी के नाम से जानी जाती है, एक मिठाई है। इसे मूल रूप से ईरान में इसी नाम से जाना जाता था। यह मध्यकाल में तुर्की और फारसी व्यापारियों के साथ भारत आई और धीरे-धीरे भारत में एक लोकप्रिय मिठाई बन गई। 10वीं शताब्दी के एक अरबी ग्रंथ में भी इस मिठाई का उल्लेख है, जिसमें इसे 'जलाबिया' कहा गया है। **कई नाम हैं प्रचलित:** श्रीलंका में इसे 'पानी वलालु' कहते हैं, जो उड़द और चावल के आटे से बनती है। भारत के उत्तर-पश्चिम में इसे जलेबी, महाराष्ट्र में जिलबी तथा बंगाल और बांग्लादेश में 'जिलपी' कहा जाता है। ईरान के अलावा ट्यूनीशिया में इसे 'जल्बिया' के नाम से जाना जाता है, वहीं नेपाल में इसे 'जेरी' कहते हैं। **कई रूपों में प्रसिद्ध:** भारत के लगभग हर कोने में जलेबी बहुत लोकप्रिय है, लेकिन यह उत्तर भारत, पश्चिम बंगाल और बिहार में विशेष रूप से पसंद की जाती है। मध्य प्रदेश के जबलपुर में 'खोया जलेबी' प्रसिद्ध है तो आंध्र प्रदेश के तेनाली में गुड़ की जलेबी लोकप्रिय है, जिसे 'वेल्लम जिलेबी' कहा जाता है।

लाजवाब होता है जलेबा: अपने देश में कुछ जगहों पर और ख़ास अवसरों पर बड़े आकार की जलेबी, जिसे जलेबा कहते हैं, बहुत लोकप्रिय है। जलेबी और जलेबा में मुख्य अंतर उनके आकार और गाढ़ापन का होता है। एक जलेबा करीब 250 ग्राम वजन का हो सकता है। जलेबा एक सामान्य जलेबी का विशाल और मोटा संस्करण यानी 'किंग साइज' संस्करण होता है, जिसका हर टुकड़ा काफी बड़ा होता है। इसे पकने और चाशनी में पूरी तरह भीगने के लिए ज्यादा समय तक तला जाता है, जबकि जलेबी पतली और कुरकुरी होती है।

कुछ ही जगह मिलता है जलेबा: जलेबा कुछ ही जगहों पर मिलता है। भारत की धार्मिक राजधानी बनारस में भादो महीने में रतजगा पर्व के अवसर पर जलेबा मिलता है। वहां के भरतपुर, झंझोर, उदार, बरवा सहित कई गांवों में जलेबा की दुकानों पर शाम होते ही भीड़ लग जाती है। इसके अलावा दीपावली के अवसर पर पुरानी दिल्ली के कुछ इलाकों में, हरियाणा के मेवात में भी जलेबा बनाया और चाव से खाया जाता है।

फूल अपनी खूबसूरती, सुगंध और मोहकता के लिए जाने जाते हैं। हिंदी फिल्मों में भी फूलों ने नायिकाओं की खूबसूरती में चार चांद लगाने में बड़ी भूमिका निभाई है। साथ ही फिल्मी गीतों और सीस को रुमानी बनाने में भी फूलों का अहम रोल रहा है। हिंदी फिल्मों और फूलों के कनेक्शन पर एक नजर।

फूलों से खूब निखरती रही है
फिल्मी एक्ट्रेससेस की खूबसूरती



'हरियाली और रास्ता' में माला सिन्हा-मनोज कुमार 'आराधना' में शर्मिला टैगोर के साथ राजेश खन्ना की खूबसूरती और उनकी उपस्थिति को फूलों ने और भी सुंदर-मोहक बना दिया। फिल्म 'हरियाली और रास्ता' में मनोज कुमार और माला सिन्हा पर फिल्माया गया गीत 'बोल मेरी तकदीर में क्या है' में माला सिन्हा ने अपने बालों को गुलदाउदी से इस प्रकार से सजाया है कि उनकी मंद-मंद मुस्कान की मोहकता और भी बढ़ गई। आगे चलकर साल 1992 में रिलीज फिल्म 'तहलका' के 'दिल दीवाने का डोला दिलदार के लिए' में अभिनेत्री ने अपनी पूरी चोटी को फूलों में गुंथकर ऐसा स्टाइल बनाया कि सालों तक यह फैशन शायदियों में दुल्हन के सिर चढ़कर बोला। **फूलों वाले ये सदाबहार गीत:** बात फिल्म और फूलों की चली है तो यहां एक और बात का जिक्र करना जरूरी हो जाता है। हिंदी फिल्मों में जहां एक ओर अभिनेत्रियों ने अपनी हेयर स्टाइलिंग के लिए फूलों का प्रयोग किया, तो शायरों/गीतकारों ने अपने गीतों में फूलों का खूब और बखूबी इस्तेमाल किया, कभी सीधे-सीधे तो कभी प्रतीक के रूप में। 'आरजू' फिल्म का गीत 'ऐ फूलों की रानी बहारों की मलिका', 'सुरज' का गीत 'बहारों फूल बरसाओ, मेरा महबूब आया है', 'सरस्वती चंद्र' का 'फूल तुम्हें भेजा है खत में', 'प्रेम पुजारी' का 'फूलों के रंग से' जैसे तमाम ऐसे गीत हैं, जो आज भी महफिलों में बजते हैं। सोशल मीडिया के दौर में भी इन सदाबहार गीतों पर खूब वीडियोज बनाए जाते हैं और समय-समय पर ये गाने ट्रेंड भी करते हैं।

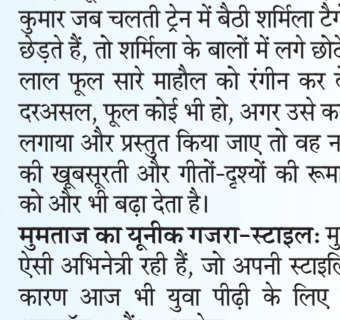
फूलों से निखरी इनकी भी खूबसूरती: 'आज मैं जवान हो गई हूँ' (मैं सुंदर हूँ) गीत में लीना चंदावरकर, 'पल-पल दिल के पास कोई रहता है' (ब्लैकमेल) में राखी

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश

अधिकांश फूल अपने-आप में इतने सुंदर-मोहक होते हैं कि उन्हें देखकर मन प्रफुल्लित हो उठता है। उस पर जब कोई फिल्म अभिनेत्री अपने बालों में कोई फूल या फूलों का गजरा लगा ले तो उनकी खूबसूरती में मानो चार चांद लग जाते हैं। नरगिस से लेकर नरगिस फाखरी तक, हेलन से हेमा मालिनी तक, रेखा से राखी तक, मीना कुमारी से मुमताज तक, शर्मिला टैगोर से शिल्पा शेट्टी तक, माला सिन्हा से माधुरी दीक्षित तक। चाहे किसी भी पीढ़ी की अभिनेत्री रही हों, सभी ने अपनी सुंदरता बढ़ाने के लिए फूलों को न सिर्फ अपने बालों में लगाया बल्कि उनकी रंगत इस तरह बिखेरी कि हर दौर में दर्शक उनके जलवों के कायल होते रहे हैं। फिल्म निर्माता-निदेशकों के लिए फूल सदियों से प्रेरणा का सबब रहे हैं। हर रंग, हर तरह के फूल फिल्मी दृश्यों की सुंदरता, नजाकत और काव्यात्मकता को बढ़ा देते हैं। **फूलों से बढ़ती है दृश्यों की खूबसूरती:** फिल्मी दृश्यों में अगर फूलों के बाग हों, तो नायक-नायिका की रोमांटिक उपस्थिति इनसे और बढ़ जाती है। गीत या फिर किसी दृश्य में अगर फूल नजर आते हैं, तो उनकी सुंदरता कई गुना बढ़ जाती है। इसके एक नहीं कई उदाहरण हैं। राखी और शशि कपूर पर फिल्माए गए गीत 'ओ मेरी शर्मीली' (शर्मीली) में गुलाब की रौनक है, तो शर्मिला टैगोर-राजेश खन्ना पर फिल्माए गए गीत 'कोरा काजग था ये मन मेरा' (आराधना) की ओर भी रोमांटिक किया है डहेलिया के फूलों ने। एवरग्रीन गीत 'मेरे सपनों की रानी कब आएगी तू' (आराधना) में राजेश खन्ना, सुजीत कुमार जब चलती ट्रेन में बैठी शर्मिला टैगोर को छेड़ते हैं, तो शर्मिला के बालों में लगे छोटे-छोटे लाल फूल सारे माहौल को रंगीन कर देते हैं। दरअसल, फूल कोई भी हो, अगर उसे करीने से लगाया और प्रस्तुत किया जाए तो वह नायिका की खूबसूरती और गीतों-दृश्यों की रुमानियत को और भी बढ़ा देता है। **मुमताज का यूनीक गजरा-स्टाइल:** मुमताज ऐसी अभिनेत्री रही हैं, जो अपनी स्टाइलिंग के कारण आज भी युवा पीढ़ी के लिए फैशन आइकन हैं। राजेश खन्ना-मुमताज की फिल्म 'अपना देश' के गीत 'कजरा लगा के, गजरा सजा के बिजुरी गिरा के जइयो न' में मुमताज ने जिस तरह से बेला के फूलों से बना गजरा



'अपना देश' में मुमताज-राजेश खन्ना



'लोकमेव' में राखी के साथ धर्मद



'शर्मीली' के एक गीत में राखी-शशि कपूर